चैतन्य लहरी

खण्ड : X 1998 अंक : 4, 5 एवं 6

75 वां जन्मोत्सव विशेषांक

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद, प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं, त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

भक्तों के दु:खों एवम् कष्टों को दूर करने वाली, हे देवी, कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ! हे पूर्ण ब्रह्माण्ड की जननी, कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ! हे विश्वेश्वरी, कृपा करके इस विश्व की रक्षा कीजिए! हे देवी, पूरा ब्रह्माण्ड आप ही पर निर्भर है ! आप ही इस संसार का आधार हैं क्योंकि पृथ्वी मां के रूप में आपने ही स्वयं को स्थापित किया है । कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ।

इस अंक में

			पृष्ठ नं.
1	सम्पादकीय		
2.	अभिनन्दन कार्यक्रम	20-03-1998	5
	श्री माताजी का प्रवचन	20-03-1998	9
3.	जन्मदिवस पूजा	21-03-1998	17
4.	दिव्य संगीत की चार रातें	22 से 25-03-1998	24
5.	स्मरणीय समापन	26-03-1998	25

सम्पादक : योगी महाजन

प्रकाशक : विजय नालगिरकर
162, मुनीरका विहार,
नई दिल्ली-110 067

मुद्रक : अभिनव प्रिन्ट्स, दिल्ली-34,
फोन : 7184340

75 वां जन्म-महोत्सव

गुरुनानक देव जी के जन्मोत्सव के अवसर पर सिख संगतों को प्राय: गाते हुए सुना जा सकता है:

'सतगुरु नानक पगटया, मिटी धुन्ध जग चानण होया' अर्थात् गुरुनानक देव जी जब पृथ्वी पर अवतरित हुए तो अज्ञानान्धकार (धुंध) समाप्त हो गया और पूरा विश्व प्रकाश (आध्यात्मिक) से जगमगा उठा ।

गुरुनानक एक आत्मसाक्षात्कारी थे, गुरु थे, सन्त थे, जिन्होंने अपने दो शिष्यों (बाला एवं मरदाना) को आत्म साक्षात्कार प्रदान किया । परन्तु मां आदिशक्ति-जिनकी स्तुति गाते हुए आदि शंकराचार्य ने अपनी महान कृति सौन्दर्य-लहरी में कहा :

अविद्यानां मन्त-स्तिमिर-मिहिर-द्वीप-नगरी,
जड़ानां चैतन्य-स्तबक-मकरन्द-स्रुतिझरी ।
दरिद्राणां चिन्तामणि गुणनिका जन्मजलधौ
निमग्नानां दंष्ट्रा मुरिपु - वराहस्य भवति ॥ (3)

हे देवी, आपकी चरण रज ही वह द्वीप-नगरी है जिससे आध्यात्मिक प्रकाश रूपी सूर्य उदय हो कर आपके भक्तों के हृदय से अज्ञानान्धकार को दूर करता है। आपकी चरण रज रूपी पुष्प कलियों में से बहता हुआ ज्ञानामृत जड़मति को चैतन्यशील कर देता है। दरिद्रियों के लिए यह चिन्तामणियों की माला है। जन्ममरण रूपी संसार सागर में डूबे हुए मानव के लिए यह वराहवतार के दांत की सदृश उद्धारक है।

आदिशक्ति माताजी श्री निर्मलादेवी आध्यात्मिक ज्ञानानुभूति का एकमात्र स्रोत हैं। लाखों लोगों को सामूहिक आत्म साक्षात्कार देने के लिए उनका एक कटाक्ष काफी है। जन-कार्य-क्रमों में पूछे जाने पर अधिकतर लोग अपने हाथ उठा कर पुष्टि करते हैं कि उनकी कुण्डलिनी जागृत हो गई है तथा शीतल-चैतन्य-लहरियों का अनुभव उन्हें अपनी हथेलियों तथा ब्रह्मरन्ध्र पर हुआ है। श्री माताजी सहजयोगदायिनी हैं। उनके दर्शन मात्र से जन्म जन्मान्तरों के पाप धुल जाते हैं। गुरु नानक देव जी कहते हैं:-

'तुझ डिट्ठे सच्चे पातशाह, मल जन्म जन्म दी कट्टिए'

महामाया रूप में पृथ्वी पर अवतरित हुई इस महावतार-पूर्णावतार-का 75वां जन्म-दिवस 21 मार्च 1998 को था । सहजयोगियों की प्रेममयी, सान्द्रकरुणा मां ने, अत्यन्त कृपा करके, भारत की राजधानी दिल्ली को 75वें जन्मोत्सव का आयोजन करने का सौभाग्य प्रदान किया ।

खुशी से सहजयोगी उछल पड़े । ऐसा सुनहरा अवसर फिर हमें कब प्राप्त होगा? उत्सव आलीशान होना चाहिए । यह शताब्दी की महानतम घटना होनी चाहिए । प्रेमोद्गार बह निकले सहजयोगियों के हृदय से । इस स्मरणनीय अवसर पर आशीर्वादित होने के लिए विश्व भर की दैवी शक्तियां एकत्र हो गईं । एक बार फिर भारतीयम-दिल्ली के स्काउट-मैदान पर उत्सव मनाने का निर्णय किया गया । पांच भव्य तोरण द्वार बनाए गए; पांचवां, पांडाल का प्रवेश, द्वार जयपुरी शैली में हवा-महल बनाया गया । सभागार की गुम्बददार छत में बहुत से सुन्दर फानूस तथा चमचमाती बत्तियां लगाई गईं । सभागार में बैठने के स्थान को बढ़ाने के लिए चहुँ ओर दस फुट चौड़ा लकड़ी का मंच बनाया गया ।

मंच का मनोहारी पृष्ठभाग सहजयोगी उद्यान-विशेषज्ञ श्री खोबर ने रंग एवं ब्रुश के स्थान पर सुन्दर पत्थर जड़ित मिट्टी में लगे, लहलहाते हरे रंग के पौधों से बनाया । यह सुन्दर पहाड़ी सम लग रहा था जिसके सीने से निकलती हुई जलधारा इसे स्वर्गीय छटा प्रदान कर रही थी । जन्म दिवस की संध्या को जब इस पर छोटे-छोटे दीपक जलाये गये तो भारतीय सहजयोगियों को इसने उस पौराणिक द्रोणगिरि पर्वत का स्मरण कराया, जिसे लक्ष्मण को लगे शत्रु के बाण का विष उतारने के लिए श्री हनुमान उठा लाए थे । 8000 लोगों के बैठने की क्षमता वाले सभागार तथा मंच को सुसज्जित करने के लिए दिल्ली युवा शक्ति ने दिन और रात कार्य किया । कई समितियों का गठन किया गया, जिनमें से एक विदेशों तथा देश के भिन्न स्थानों से आने वाले सहजयोगियों को हवाई अड्डे से लाने तथा उन्हें सुविधापूर्वक ठहराने के लिए थी । एक विशाल भोजन-कक्ष बनाया गया जिसमें एक ही समय पर 3000 व्यक्ति खाना खा सकते थे । देश तथा विदेश से आए हुए सभी सहजयोगी-स्त्री या पुरुष- अपना हृदय उड़ेलने के लिए उद्यत थे । उनकी एकमात्र शुद्धतम इच्छा अपनी परमेश्वरी मां को प्रसन्न करना था । हर हृदय से प्रार्थना निकल रही थी :-

देवि प्रपन्नार्तिहरे प्रसीद
प्रसीद मातर्जगतोऽखिलस्य ।
प्रसीद विश्वेश्वरी पाहि विश्वं
त्वमीश्वरी देवि चराचरस्य ॥

अर्थात भक्तों के दु:खों एवम् कष्टों को दूर करने वाली, हे देवी, कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ! हे पूर्ण ब्रहमाण्ड की जननी, कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ! हे विश्वेश्वरी, कृपा करके इस विश्व की रक्षा कीजिए ! हे देवी, पूरा ब्रहमाण्ड आप ही पर निर्भर है ! आप ही इस संसार का आधार हैं क्योंकि पृथ्वी मा के रूप में आपने ही स्वयं को स्थापित किया है । कृपा करके प्रसन्न हो जाइये ।

सदैव अपने वचन में प्रतिबद्ध-

'पुष्पं, फलं, तोयं'

परमेश्वरी मां ने निरन्तर चैतन्य प्रवाह करके सहज योगियों को अन्तर्राष्ट्रीय सामूहिकता को आशीर्वादित किया । छ: दिन और छ: रातें हम सब श्री माताजी से बहने वाली शीतल चैतन्य लहरियों के सागर में तैरते रहे ।

हे परमेश्वरी मा, आपको प्रणाम ! आपको कोटि-कोटि प्रणाम ।

तनियासं पांसूं तव चरण-पङ्केरूह-भवं,
विरिंचि: संचिन्वन विरचयति लोका-न विकलम्!
बहत्येन शौरि: कथमपि सहस्रेणं शिरसां,
हर: संक्षुदयैनं भजति भसितोद्धूलन-विधिम्

हे देवी, आपके चरण कमल से उत्पन्न होने वाले छोटे से रजकण को चुन कर ब्रह्मा सतत लोक लोकान्तरों की सृष्टि करते हैं, शेषनाग बड़े परिश्रम से अपने सहस्र सिरों पर उठाकर इसे धारण करते हैं और प्रलयकाल में श्री महेश इसी रजकण की भस्म बनाकर अपने अंगों पर लगाते हैं अर्थात् आपके सम्मुख ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की शक्तियां तुच्छ हैं।

सभी सहजयोगियों की हे प्रेममयी मां, हे महामाया रूपा, विश्वभर के हम सभी सहजयोगी हृदय से आपके श्री चरणों में प्रार्थना करते हैं कि हमें अपने चरण कमलों की धूल का एक छोटा सा कण बनाए रखें और हमें आशीर्वाद दें कि आपके चरण कमलों का निरन्तर ध्यान ही हमारा एकमात्र आनन्द स्रोत हो ।

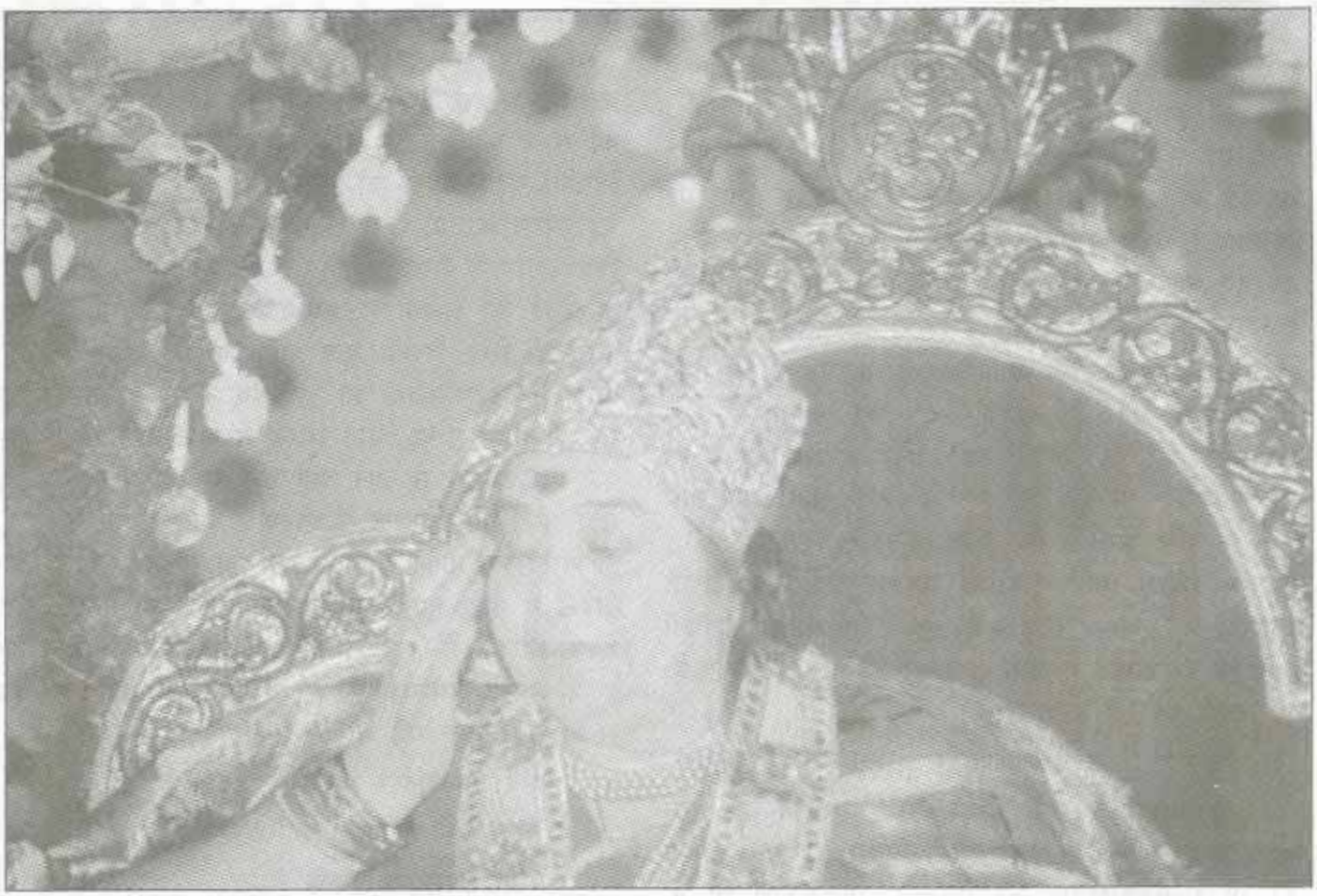

अभिनन्दन कार्यक्रम

दिल्ली 20-03-1998

प्रकाशोत्सव-(परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी के जन्ममहोत्सव) का श्रीगणेश 20 मार्च 1998 को रंगारंग अभिनन्दन कार्यक्रम से हुआ । हमारी प्रिय देवी मां और श्रीमन सी.पी.श्रीवास्तव के अतिरिक्त बहुत से सम्माननीय अतिथियों तथा भारत और विश्व के कोने कोने से आए सहजयोगी भाई बहनों ने इस उत्सव की शोभा बढ़ाई । श्री बलराम जाखड़ - पूर्व लोकसभाअध्यक्ष, श्री पी. चिदम्बरम-भारत के पूर्व वित्त मन्त्री, श्री सुन्दरलाल पटवा-मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री, श्री ऐजाज रिजवी-उत्तर प्रदेश के खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति मन्त्री एवं भाजपा के अल्पसंख्यक कोष्ठ के अध्यक्ष तथा सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री राहुल बजाज श्रीमाताजी का अभिनन्दन करने वाले लोगों में मुख्य थे ।

श्री बलराम जाखड़ (सांसद एवं लोकसभा के पूर्व अध्यक्ष) ने हिन्दी में अपना भाषण आरम्भ किया । श्रीमाताजी के लिए चिरायु की कामना करते हुए वे अंग्रेजी में बोलने लगे। उन्होंने कहा : "चहुं ओर मुझे विश्वभर से आए हुए चेहरे दिखाई दे रहे हैं। यही भाई चारा है, यही मानवता है, यही उनकी (श्रीमाताजी) महानता है। हमारे शास्त्रों में, हमारे पूर्वजों ने कहा है:-

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणी पश्यन्तु, मां कश्चित् दुःख भाग भवेत ।

किसी को दुख न पहुंचे, किसी को आघात न लगे, सभी लोग भले हों, श्रीमाता जी यही सब कुछ हम सबके लिए कर रहे हैं। उन्होंने पूरे विश्व के सम्मुख प्रमाणित कर दिया है कि पूरा विश्व एक परिवार है। 'वसुधा ऐव कुटुम्बकम' (यह पूरी पृथ्वी एक है) । विश्व के लोग इस बात को महसूस नहीं करते परन्तु हमारे पूर्वजों द्वारा कहे गए इस कथन का अनुभव करने का समय अब आ गया है। आज श्रीमाता जी के कार्य का सार तत्व है:

'यत्र विश्व भवते एक नीड़म'-पूरे विश्व की एक मात्र घोंसला बनने की कामना है। आज विश्व बहुत बड़ा नहीं रह गया, यह घोंसले की तरह बहुत छोटा सा है और इसी में हमें रहना है। ऐसा होना उन्हीं के प्रेम, उन्हीं के आशीर्वाद से सम्भव है। मेरी यही कामना है कि हितार्थी भाव से परस्पर मिलजुल कर हम सदैव स्वस्थ एवं आशीर्वादित बने रहें। मैं क्या कहूं, यह एक प्रश्न है, एक प्रवाह है, प्रेम, स्नेह, आशीर्वाद का प्रवाह, मानो गंगोत्री से गंगा बह निकली हो । आप सब यही हैं।

मानव रूप में आप श्रेष्ठता का अवतरण हैं: मैं उन्हें यही कहता हूं। श्रीमाताजी मैं घंटों बोलना चाहता हूँ और मुझे अपनी लम्बाई के अनुरूप बोलना भी चाहिए, परन्तु ऐसा करने में मैं असमर्थ हूं क्योंकि मुझे रेलगाड़ी पकड़नी है। आशा है आप मुझे क्षमा करेंगी । फिर भी हम सब की ओर से मैं एक बात कहना चाहता हूँ कि साक्षात् शरीर में सदैव आप कल्याणकारी, आशीर्वदात्री, स्वस्थ और सदा की तरह से मुस्कराती हुई आप हमारे साथ बनी रहें, हमारे लिए यह बहुत बड़ा वरदान होगा । आपका कोटि कोटि धन्यवाद ।

श्री पी.चिदम्बरम (भारत के पूर्व वित्त मंत्री) ने विद्वता पूर्वक कहा : श्रीमाताजी श्री निर्मला देवी जी, सहजयोगी एवं माननीय अतिथिगण ।

श्रीमाताजी के साथ यह मेरी दूसरी भेंट है और सहजयोगियों के साथ पहली । स्पष्ट बात यह है कि यहां मैं अत्यन्त आश्चर्यचकित हूँ और स्वयं को अति तुच्छ पाता हूँ। स्वयं से मेरा एक प्रश्न है कि ऐसी कौन सी बात है जो विश्व के कोने कोने से पूरे भारत से और इस महानगर के हर हिस्से से इस अवसर पर आप सबको यहां खींच लाई? भिन्न धर्मों, जातियों तथा भिन्न पृष्ठभूमियों के पांच हजार लोगों को एक पंडाल के नीचे लाने वाली कौन-सी शक्ति है? आप सबको इतना समर्पित, इतना विनम्र, इतना एकतावद्ध, इतना आनन्दमय होने की प्रेरणा क्या है? मैं स्वयं से प्रश्न कर रहा हूँ कि एक शाम को जब पांच हजार लोगों के साथ ऐसा हो सकता है तो विश्व के पांच अरब लोगों के साथ यह घटित क्यों नहीं हो सकता? और, सीमित रूप से, इस महान, प्राचीन देश में रहने वाले 95 करोड़ लोगों के साथ यह घटित क्यों नहीं हो सकता। स्वामी विवेकानन्द के शिष्यों में से निवेदिता बहन मुख्य थीं । उनके जीवनीकार ने लिखा है, जिसे मैं उद्धरित कर रहा हूँ : "श्रद्धा की रचना, तर्क की न्यायसंगत नींवों पर नहीं होती, इसकी रचना तो अन्तर्ज्ञान की अदृष्ट चट्टान पर होती है।"

"Faith is not built on the Syllogistic foundations of reason, but it is built on the unseen rock of intution"

श्रद्धा आप सबको यहां पर लाई है, प्रेम ने आपको

एकता प्रदान की है और मैं भी श्रीमाता जी का अभिवादन करने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए आपमें सम्मिलित हुआ हूँ । मैं इतना छोटा और इतना क्षुद्र हूँ कि, श्रीमाता जी, यहां उपस्थित सभी लोग, सभी सजहयोगियों तथा विश्वभर के अन्य उपस्थित लोगों से उनकी आशीष के अतिरिक्त कुछ अन्य मांग सकने में अक्षम हूँ । मैं आपसे आशीष, प्रेम एवम् पथ प्रदर्शन की याचना करता हूँ । कृपा करके विश्व के लोगों का पथ प्रदर्शन करें । आपका हार्दिक धन्यवाद ।

संयुक्त राष्ट्र संघ के पर्यावरण क्षेत्र में वरिष्ठ अधिकारी **श्री ग्रेगोर डी कात्वबर मैट्टी** ने अपनी कृतज्ञता को अभिव्यक्ति करते हुए कहा :

परम पूज्य श्री माताजी, सर सी.पी., महामान्य एवं मान्यवर अतिथिगण । श्रीमाताजी, दो वर्ष पूर्व वायुयान में बैठकर मैं आपके जन्मोत्सव के लिए आ रहा था, पर मेरी समझ में नहीं आ रहा था कि मैं आपके लिए क्या उपहार लाऊं ! मेरे सम्मुख यह जटिल प्रश्न था । कला के सृष्टा भगवान के लिए कौन सी हस्तकला की वस्तु! सूर्य के लिए कौन सा दीपक!, चांद के लिए कौन सी चांदनी!, समुद्र के लिए कौन से जल की बूंद ले जाई जा सकती है। तभी, श्रीमाताजी मुझे लगा कि हमारे पास कुछ ऐसी चीजें भी हैं जिनका आपके पास अभाव है। हम अंधेरे से प्रकाश की ओर चल सकते हैं, आप नहीं चल सकतीं। हम दासता से स्वतन्त्रता की ओर जा सकते हैं- आप नहीं, क्योंकि आप तो स्वतन्त्रता का सार तत्व हैं। हम अहम् और बन्धनों से मुक्त होकर आनन्द एवं मान्यता की स्थिति की ओर जा सकते हैं। परन्तु श्रीमाताजी आप देवत्व को नहीं पहचान सकतीं क्योंकि आप तो जो हैं वह हैं, आप वही थीं और सदा वही रहेंगी । परन्तु हम आपको खोज सकते हैं, आप ऐसा नहीं कर सकतीं। मेरे मित्रो, भारत में 'लीला' नामक शब्द का यही रहस्य है। परमात्मा को भी खोज के लिए हमारी चेतना की आवश्यकता थी । देवत्व को खोजना कितना अद्भुत है! हमारे बिना आप यह कार्य किस प्रकार कर पातीं? तो श्रीमाताजी आपके जन्मदिवस के इस अवसर पर हम आपको अंधेरे से प्रकाश की ओर, दासत्व से मुक्ति की ओर ले जाने वाली यह तीर्थ-यात्रा भेंट करते हैं और शपथ लेते हैं कि आपका संदेश हम जन-जन तक पहुँचायेंगे और स्वयं को भी सुधारेंगे । श्रीमाताजी हम अपनी गहन कृतज्ञता एवम् प्रेम की अभिव्यक्ति करते हैं। और अन्त में मैं कहूंगा कि,

श्रीमाताजी, हम इस भारत भूमि पर हैं, इसका हम गहन सम्मान करते हैं और आपसे प्रार्थना करते हैं कि विवेक की यह मूल भूमि आपके संदेश द्वारा पूरे विश्व को आशीर्वादित करती रहे । अन्त में यह कहते हुए आपकी आज्ञा से मैं समापन करूंगा : गुरुर्ब्रह्मा, गुरुर्विष्णु, गुरुर्देवो महेश्वरा, गुरु-साक्षात् परब्रह्म, श्रीमाता जी निर्मला मां तस्मै श्री गुरुवे नमः ।

श्री फिलिप्स जेस (जर्मनी)

आयोजकों द्वारा तीन मिनट की समय सीमा से विनोदपूर्वक खिलवाड़ करते हुए श्री फिलिप्स ने श्रीमाता जी द्वारा दिए गए मानसिक सन्तुलन का प्रदर्शन किया । कृतज्ञता प्रकट करते हुए उन्होंने कहा :

परम पूज्य श्रीमाताजी, सम्माननीय सर सी.पी., आदरणीय अतिथिगण एवं विश्वभर से आए हुए प्रियतम सहजयोगी भाई-बहनों; कल आयोजकों ने हमसे कहा कि आज रात्रि के कार्यक्रम में बहुत छोटा-सा भाषण देकर योगदान करें : वास्तव में उन्होंने कहा कि हम तीन मिनट से अधिक न बोलें। अतः श्रीमाताजी से अपने सम्बन्ध को लेकर सभी अन्य सहजयोगियों की तरह से मैं भी एक मूलभूत समस्या का सामना कर रहा हूँ कि किस प्रकार मैं श्रीमाता जी के प्रति अपना प्रेम और कृतज्ञता की अभिव्यक्ति करूं? इस कार्य को मैं तीन मिनट में कैसे करुं? मैंने सोचा कि सहजयोगी बच्चों को श्रीमाता जी द्वारा प्रदत्त शक्तियों के बिना मैं इस कार्य को नहीं कर सकता । श्रीमाता जी आप आदि मां हैं, बीसवीं शताब्दी में आप अवतरित हुईं, किस प्रकार मैं तीन मिनट में आपका धन्यवाद कर सकता हूँ! आधुनिक समय की आप अवतार हैं, आप मानव को मोक्ष प्रदान करने के लिए आई हैं, किस प्रकार मैं तीन मिनट में आपको धन्यवाद दे सकता हूं! श्रीमाता जी आप सहस्रा-सहस्र सहजयोगियों की माँ हैं। उन्हें आपने आत्मसाक्षात्कार, जागृति और पुनर्जन्म का बहुमूल्य दिव्य उपहार प्रदान किया है। परमात्मा के अतिरिक्त कोई अन्य यह उपहार नहीं दे सकता । तो श्रीमाताजी किस प्रकार मैं तीन मिनट में आपको धन्यवाद दे सकता हूँ! मैं यदि अपने विषय में कहूँ तो जब मैं आपसे मिला था तब एक खोया हुआ उच्छृंखल और लक्ष्यविहीन युवक था । आपने मुझे न केवल पुनर्जन्म, एवं आत्मसाक्षात्कार प्रदान किया परन्तु इससे भी बहुत अधिक दिया । आपने मुझे भौतिक अस्तित्व दिया, एक सुन्दर परिवार प्रदान किया, अच्छा व्यवसाय दिया, सामाजिक प्रतिष्ठा प्रदान की, गौरव दिया और इससे भी अधिक बहुत कुछ प्रदान किया । श्रीमाता जी आपने मुझे सहजयोग में पद प्रदान किया जिसके द्वारा मैं आपके दिव्य कार्य में योगदान कर सकता हूँ श्रीमाताजी किस प्रकार तीन मिनट के समय में मैं आपका धन्यवाद कर सकता हूँ! तो आप एक कल्पना कर सकते हैं कि आज रात्रि के विषय में सोचते हुए मैं कितने धर्म संकट में हूँगा ? यहां आने से एक घंटा पूर्व मुझे लगा कि मुझे प्रेरणा प्राप्त हो गई है और तब मैंने कविता की शरण ली :

"रातों को चमकते हुए खरबों सितारे,
सौन्दर्य आपका वर्णन कर पाते नहीं,
खरबों दिवस चमककर भी सूरज
प्रकाश आपका प्रतिबिम्बित कर पाता नहीं,
खरबों पौधों का पोषण करने वाली प्रकृति
मातृत्व प्रेम में आप सम हो सकती नहीं,
प्रात: बेला में आपकी स्तुति गाते हुए पक्षी,
गुण आपके कभी वर्णन कर पाते नहीं,
कोटि-कोटि पृष्ठ पुस्तकों के रंगने वाले विद्या विशारद
आपके विवेक की एक झलक दर्शा पाते नहीं,
संगीतज्ञों की खरबों धुनें
आपकी एक मुस्कान सम हो सकती नहीं,
कवियों की खरबों कविताएं
आपके दिव्य अस्तित्व का जादू कभी वर्णन कर पाई नहीं,
तीन मिनट में तब मैं किस प्रकार
धन्यवाद आपका कर सकूं?"

डॉ. ब्रियान वैल्स इंग्लैण्ड के सबसे बड़े मानसिक स्वास्थ्य संस्थान के चिकित्सा निदेशक ने सहजयोग को 'पूर्ण विज्ञान, पावनविज्ञान, दिव्य विज्ञान' बताते हुए इस प्रकार कहा:

श्रीमाताजी और सहजयोगी भाई बहनों,

श्रीमाताजी आपके जन्मदिवस की पूर्व संध्या को इस बेला में आपके सम्मुख खड़ा होना कितने सम्मान की बात है! यह विनम्रता प्रदायक अनुभव भी है. एक वैज्ञानिक और औषध चिकित्सक के रूप में मैं आपके सम्मुख इस प्रकार खड़ा हूं मानों कैलाश पर्वत के सम्मुख रेत का एक कण। यहां मैं पावन भय, आश्चर्य, विनम्रता एवम् प्रेम पूर्वक खड़ा हुआ हूँ। महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों, पुस्तकालयों और कम्प्यूटरों में अथाह ज्ञान भरा हुआ है। श्रीमाताजी जो विवेक आपने प्रदान किया है उसकी तुलना में यह ज्ञान पावन भय न होकर अत्यन्त निरर्थक है। जो विज्ञान आपने हमें पढ़ाया है वह पावन है, पूर्ण है और दिव्य है। श्रीमाताजी साधारण सा बन्धन डालना जो आपने हमें सिखाया है उसकी तुलना में सारी तकनीकी एवम् चिकित्सा विज्ञान तुच्छ है। श्रीमाताजी आप हमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक रोगों से मुक्ति प्रदान करती हैं। कोई औषधि, कोई रसायन, कोई विज्ञान या अन्य कुछ इतना शक्तिशाली नहीं है जितनी शक्तिशाली आपकी प्रेरणा एवम् प्रेम है। आपिके जन्मदिवस के इस शुभ अवसर पर, श्रीमाताजी आपके विवेक के लिए मैं आपका कोटि-कोटि धन्यवाद करता हूं और आपके लिए असंख्य जन्मदिवसों की कामना करता हूं। धन्यवाद।

स्वयं को श्रीमाताजी के प्रति 'पूर्ण समर्पित' करते हुए हमारे सम्माननीय **सर सी.पी. श्रीवास्तव** ने अपनी पाण्डित्यपूर्ण शैली में इस प्रकार कहा :

श्री निर्मलामाताजी, पहली बार मैंने इन्हें 'माताजी' कहकर सम्बोधित किया है : मैं सोचता हूं कि इनके 75वें जन्मोत्सव के अवसर पर अब समय आ गया है कि मैं स्वयं को इनके प्रति पूर्ण समर्पित कर दूं : श्री पटवा जी, श्री रिजवी जी, श्री राहुल बजाज जी, प्रिय सहजयोगियों एवम् सहजयोगिनियों, माननीय अतिथिगण, भाइयों और बहनों,

इस स्मरणीय उत्सव में भाग लेने के लिए आपके सम्मुख खड़ा होकर मैं स्वयं को विशिष्ट रूप से भाग्यशाली समझता हूँ। श्री चिदम्बरम ने एक प्रश्न पूछते हुए कहा कि विश्व के कोने कोने से आए इतने सारे लोग किस प्रकार यहां एकत्रित हुए हैं; कौन सी शक्ति इन्हें यहां लाई है? मैं आपके सम्मुख एक घटना का वर्णन करना चाहूँगा जो संभवत: इस बात को स्पष्ट कर देगी कि किस प्रकार इस दिव्य महिला ने अपने समर्पण एवम् अथक कठोर परिश्रम से एक एक कदम करके सहजयोग को खड़ा किया। वर्ष 1974 का एक दिन मुझे याद आता है, लंदन में मैंने एक नौकरी ली थी और ऑक्सटैड और सरे (oxted & surrey) नामक स्थान पर हम रहते थे। यह स्थान लंदन से दूर है और मैं प्रतिदिन वहां से लंदन आया-जाया करता था। मैं 24 वर्ष पूर्व की बात कर रहा हूँ। एक शाम जब मैं घर वापिस आया, तो घर पर अपनी पत्नी एवं नौकरानी को देखने की मुझे आशा थी, परन्तु उनके स्थान पर बैठक के एक सोफे पर गोरे रंग के एक युवा व्यक्ति को बैठा पाया। उसे वहां देखने की मुझे कोई आशा न थी। उसने मुझे देखा और मैंने उसे और दोनों एक दूसरे को देख कर हैरान हुए कि हम कौन थे! एक अन्य भ्रान्ति उत्पन्न करने वाली बात यह थी कि उसने मेरे कपड़े पहने हुए थे, मेरा कुर्ता और पायजामा। मैं हैरान था कि कहीं मैं किसी भूत को तो नहीं देख रहा हूँ! मैं होश-हवास में तो हूँ! कहीं मुझे कुछ हो तो नहीं गया! उन्हीं कदमों से मैं वापिस मुड़ा और अपनी पत्नी के पास जाकर पूछा - यह कौन है? उसने मुझे बताया कि उस दिन वे पिकाडिली सर्कस गई थीं और वहां उन्होंने एक युवा व्यक्ति को उपेक्षित अवस्था में पड़ा हुआ देखा, स्पष्ट था कि वह बीमार है। तो वे उसके पास गईं और पूछा कि क्या बात है? लड़के ने कहा कि वह बहुत बीमार है, लगभग मर रहा है, और उसकी देखभाल करने वाला कोई नहीं है। तब मेरी पत्नी ने कहा कि मेरे साथ आओ; वह उसे अपने साथ घर ले आई, उसके स्नान का प्रबन्ध किया तथा उसके पास कपड़े न होने के कारण उसे मेरे कपड़े दिए। मुझे बहुत शक्ति मिली। मुझे बहुत गर्व था कि इतने प्रेम और करुणा से वे उसे घर लाईं।

वह हमारे घर पर दो-तीन महीने रहा । उसका सहज-योग से उपचार किया गया और कुछ ही दिनों में उसकी स्थिति सुधरने लगी । उसका पीलिया रोग समाप्त हो गया, नशों और शराब से उसे मुक्ति मिल गई और आठ सप्ताह के समय में वह गुलाब के फूल की तरह से एक सुन्दर व्यक्ति बन गया! मैंने यह पहला चमत्कार देखा था । लोग कहते हैं कि मैं यह मशीन ठीक कर सकता हूँ परन्तु मानव को ठीक करने का दावा करते हुए निर्मला जी के अतिरिक्त मैंने किसी को नहीं देखा । मानव को परिवर्तित करना कठिनतम कार्य है। केवल दिव्य शक्ति और दिव्य प्रेम से ही यह कार्य किया जा सकता है और उस दिन उन्होंने यह चमत्कार कर दिखाया था । उसके पश्चात विश्व भर में उन्होंने ऐसे लाखों चमत्कार किए । श्री पटवा जी, मैं हर सहजयोगी को एक चमत्कार मानता हूँ और हर सहजयोगिनी को एक देवदूत; मैं कहता हूँ देवदूत । परिवर्तन का अर्थ क्या है-पूर्ण अंतर्परिवर्तन, आत्मसाक्षात्कार, सर्वशक्तिमान परमात्मा से सम्पर्क, परमात्मा के प्रेम की शक्ति से सम्पर्क । एक बार जब कोई व्यक्ति परिवर्तित हो जाता है तो उसे वास्तव में देवदूत कहा जा सकता है और **यह देवदूतों की सामूहिकता, यह तो स्वर्ग का एक हिस्सा है जिसकी अध्यक्षता आदिशक्ति स्वयं कर रही हैं। क्या हम उनकी वास्तविकता को समझ सकते हैं? मैंने उनके 108 नाम लिए जाते हुए सुना है परन्तु वे इन 108 पदों से बहुत ऊपर हैं। वे असीम हैं, शब्दों से उन्हें सीमित नहीं किया जा सकता, मस्तिष्क से उन्हें समझा नहीं जा सकता ।** उर्दू के एक शायर ने कहा है-

'जो समझ में आ गया,
वो खुदा क्यों कर हुआ?

जिसे मानव का सीमित मस्तिष्क समझ ले वो परमात्मा किस प्रकार हो सकता है! अर्थात् परमात्मा समझ से परे है। उनके असंख्य पहलू हैं, बहुत से पक्ष हैं, इतने अधिक कि इनका वर्णन कर पाना असम्भव है। अभी कहा गया है कि उनके (श्रीमाताजी) सम्मुख एक कार्य है, एक महान् कार्य । वे विश्व के दस लाख लोगों को परिवर्तित कर चुकी हैं, विश्व में पांच अरब लोग हैं। अत: हमें इस विश्व में उनकी तब तक आवश्यकता है जब तक पूरे पांच अरब लोग परिवर्तित न हो जाएं। उर्दू के एक शायर ने कहा है-

"तुम सलामत रहो हज़ारों बरस,
दिन हों साल के पचास हज़ार ।"

हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि आप हज़ार वर्ष तक जीवित रहें और हर वर्ष में 365 के स्थान पर पचास हज़ार दिवस हों। परन्तु मैं इस से भी कुछ आगे जाना चाहूंगा और कहूंगा कि जब तक विश्व का हर व्यक्ति परिवर्तित नहीं हो जाता तब तक हमें आपकी आवश्यकता है ताकि परिवर्तित होने के पश्चात् हर व्यक्ति देवदूत बना रह सके ।

आप सबने जो प्रेम एवं स्नेह इतनी गरिमा पूर्वक मुझ पर वर्षाया उसके लिए मैं शाश्वत्, दृढ़ एवं गहन रूप से आपका कृतज्ञ हूँ । आज मैं आपसे अनुरोध करता हूं कि आप सब मुझे स्वीकार कर लें । अभी तक सहजयोग में मैं केवल एक शिक्षार्थी था, आज मेरा अनुरोध है कि मुझे अपनी ही तरह मानकर स्वीकार करें । आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्री राहुल बजाज ने इस अवसर पर अपना हृदय उड़ेलते हुआ कहा "मैं यहां उपस्थित लोगों में से एक सौभाग्यशाली व्यक्ति हूँ जिसे वर्षों से श्री माता जी का अथाह प्रेम एवं स्नेह प्राप्त होता रहा है..."

"एक पुत्र के रूप में, क्योंकि कुछ अन्य मैं होना नहीं चाहता", उन्होंने कहा," मैं यहां पर श्री माताजी का धन्यवाद करने नहीं आया क्योंकि भारत में कोई पुत्र अपनी मां का धन्यवाद नहीं करता...।" मैं यहां आपसे (श्रीमाताजी से) अधिकाधिक प्रेम एवं आशीर्वाद की याचना करने आया हूँ ।"

अभिनन्दन समारोह

20-03-1998 दिल्ली

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

आप सभी सत्य साधकों को हमारा प्रणाम । मेरे तथा सहजयोग के विषय में आप लोगों ने इतना कुछ कह दिया है कि मेरा हृदय दूर-दूर से इस अवसर पर आए हुए आप सभी लोगों के प्रति कृतज्ञता से भर गया है। सहजयोग समझने के लिए यह आवश्यक है कि इस कलियुग में हमें अपनी स्थिति का ज्ञान हो । हम किन परिस्थितियों का सामना कर रहे हैं? हर जगह, हर देश में जिस प्रकार घटनाएं घटित हो रहीं हैं उनके विषय में सोच कर आप परेशान हो जाएंगे । समस्या क्या है? इतना अशान्त एवं तनावग्रस्त होने की लोगों को क्या आवश्यकता है? सामूहिक रूप से एवं किसी देश विशेष में, जहां भी जाते हैं, आपको एक प्रकार की भ्रान्तिपूर्ण स्थिति दिखाई पड़ती है। भयानक ! पूरा समाज ही विनाश के भय से चिन्तित नजर आता है। कारण क्या है?

आयोजित तथा अनायोजित सभी प्रकार के धर्म आदि हैं। बहुत से साधुसन्त हैं, बहुत सी पुस्तकें लिखी गई है कि आपमें कौन से गुण होने चाहिएं । परन्तु केवल सत्य साधक (जिज्ञासु) ही देख सकता है कि इस विश्व में इतनी समस्याएं क्यों हैं और आप किस प्रकार इनके समाधान में सहायक हो सकते हैं। समस्या कहां है। समस्या मानव में है। जिस प्रकार वर्णन किया गया है हम पशु अवस्था से मानवावस्था में विकसित हुए हैं।

नि:सन्देह हममें मानवीय चेतना है। इस चेतना में हम सभी प्रकार की चीजें देखने लगते हैं जो अच्छी नहीं हैं, विध्वंसक हैं और परेशान करने वाली हैं। यदि ये आपको परेशान नहीं करतीं तो इसका अभिप्राय है कि आप संवेदनशील नहीं हैं। परन्तु मानव रूप में आप संवेदनशील हैं। इसका क्या कारण है? जीवन के हर क्षेत्र में, चाहे ये राजनैतिक हो, आर्थिक हो या कोई और एक सूक्ष्म समस्या है जिसे लोग नहीं समझते । अब यदि मैं कहती हूँ कि हमारे अन्दर आत्मा है, यह हमारे हृदय में चमकती है, तो आपको मुझ पर विश्वास करने की कोई आवश्यकता नहीं है। परन्तु हमारा चित्त बाहर की ओर है। इसे आत्म-विमुख कहा जाता है, अर्थात हमारा चित्त बाहर की ओर है। इस मानवास्था में हमारा चित्त बाहर है, भिन्न बाह्य वस्तुओं पर । हमारे चित्त को क्या प्राप्त करने के लिए और विकसित होने के लिए कहां होना चाहिए? किस चीज को प्राप्त करने के लिए? सर्वप्रथम अब हमारे चित्त को आत्मा पर जाना चाहिए, आत्म ज्ञान की ओर जाना चाहिए। आरम्भ में मानव के साथ यह घटित होना चाहिए अन्यथा हमारा चित्त बाहर की ओर है, हमें धन, सत्ता, प्रतिस्पर्धा तथा अन्य सभी प्रकार की चीजों की चिन्ता लगी रहती है। **एक बार यदि किसी प्रकार से आपका चित्त आत्मा की ओर चला जाए तो आप आत्मा की शक्ति बन जाते हैं। और आत्मशक्ति सर्वोच्च शक्ति है। सर्वप्रथम आत्मा प्रेम करती है, बिना कुछ आशा किए । बस प्रेम करती है। यह बन्धन मुक्त व्यक्तित्व है जोकि मात्र प्रेम प्रसारित करता है।** किसी को कष्ट हो, किसी को समस्या हो, तुरन्त यह प्रेम प्रसारित होने लगता है। हृदय में प्रेम प्रसारण की यह शक्ति है। परन्तु हमारा चित्त आत्मा पर न होने के कारण यह कार्यान्वित नहीं हो पाती। राजनीतिक, आर्थिक तथा अन्य प्रकार के प्रयत्नों में भी चित्त बाहर की ओर होने के कारण आप प्रतिस्पर्धा में फंसते चले जाते हैं। आप बहुत योग्य बनते जाते हैं परन्तु अचानक कोई आपसे भी अधिक योग्य व्यक्ति खड़ा हो जाता है।

आपका चित्त यदि बाहर की ओर है तो बहुत से संघर्ष हैं क्योंकि बाहर की ओर रहने वाले चित्त में पावित्र्य नहीं होता। यह चित्त केवल आप पर होता है और वह भी बहुत सीमित अवस्था में । आप यदि केवल अपने पर चित्त को रखते हैं तो आपके कष्टों एवं दु:खों का कोई अन्त नहीं होगा। मुझे कहीं भी सोने में, कहीं भी खाना खाने में, परेशानी नहीं होती। मैं इन चीजों की बिल्कुल चिन्ता नहीं करती । यह सत्य है क्योंकि यह सब महत्वहीन है। परन्तु सम्भवत: मेरी रचना ही ऐसी हुई है। ठीक है, परन्तु सहजयोगी भी ऐसे हो बन गए हैं। यह चमत्कार है कि मनुष्य अपना चित्त आत्मा पर ले गया है! आत्मा पर चित्त ले जाने के पश्चात् आप हैरान होते हैं कि किस प्रकार बिना किसी प्रतिस्पर्धा, बिना किसी लड़ाई-झगड़े के कार्य होते हैं! किस प्रकार आपका चित्त आत्मा पर स्थापित हो सकता है? सर्वप्रथम आपका स्वास्थ्य सुधर जाता है, आप सुस्वस्थ हो जाते हैं। और इस प्रकार बहुत सी समस्याओं का समाधान हो जाता है। विश्व में मानसिक तनाव और गंदे भोजन आदि के कारण 30 प्रतिशत लोग सदैव बीमार रहते हैं। सर्वप्रथम आपका स्वास्थ्य सुधर जाता है।

सहजयोग में लोगों ने समझ लिया है कि आधुनिक, आर्थिक गतिविधियों ने किसी को शान्ति प्रदान नहीं की । हम अमेरिका को लें । मैं अमेरिका गई, बहुत से अमेरिकन लोगों को जानती हूँ । वे कितने परेशान हैं! उनके परिवार, उनके बच्चे बर्बाद हो गए हैं। सभी बेवकूफी की बातें हो रही हैं। हमारे भारतीय गुरु वहां जाकर धन बना रहे हैं । अमेरिका के लोगों को केवल शान्ति चाहिए, हार्दिक शान्ति । यह तभी सम्भव है जब आपका चित्त आपके हृदय पर जाता है, क्योंकि हृदय में आत्मा का निवास है और आत्मा ही शान्ति का स्रोत है। **तो पहला प्रेम है और दूसरी शान्ति है।** आप अत्यन्त शान्त हो जाते हैं। साक्षी भाव होकर सारे नाटक को आप एक मजाक की तरह से देखते हैं। किसी चीज की चिन्ता करने की कोई आवश्यकता नहीं । सभी कुछ होता रहता है। तो **व्यक्ति को यही बनना है - आत्मा बनना है। आत्मा जोकि आपकी अपनी है, जो आपके हृदय में है और जो प्रेम का, तथा शान्ति का स्रोत है।** तीसरी चीज जो आपके साथ घटित होती है वह यह है कि आनन्द क्योंकि आत्मा का स्रोत है अत: आनन्द आपके जीवन में उमड़ पड़ता है। इस प्रकार से यह उमड़ता है कि आपको समझ में नहीं आता कि किस प्रकार आनन्द के इस महान सागर से बाहर आएं । आप इसमें तैरने लगते हैं और इसका पूर्ण आनन्द लेने लगते हैं। विश्व भर में जाकर लोगों के हृदय छूकर आप इस आनन्द के सभी तट छू लेते हैं। मैं फिर कहती हूं कि **आत्मा का निवास हृदय में है। यह मस्तिष्क में नहीं रहती । मानसिक गतिविधियां आपको आत्मा तक नहीं पहुंचा सकती । आत्मा पर चित्त रखने से ही आत्मा को प्राप्त किया जा सकता है** और यह घटित होना तभी संभव है जब कुण्डलिनी की जागृति हो जाए । जीवन के दृष्टिकोण का परिवर्तित हो जाना, पूर्ण शान्ति एवम् आनन्द का आपको प्राप्त हो जाना आपके चित्त के आत्मा पर स्थित होने के कारण है। अब आप धन के विषय में नहीं सोचते । धन आपको सहज ही में प्राप्त हो जाता है। आप शक्ति के बारे में नहीं सोचते । सत्ता आपको स्वत: ही मिल जाती है। और आत्मा की शक्ति ही सर्वोच्च है, अत्यन्त शक्तिशाली एवम् धर्मपरायण । आवश्यक नहीं कि आप सन्यासी, साधुबाबा बन जाएं और सभी प्रकार के कर्मकाण्ड करें। कर्मकाण्ड अनावश्यक हैं। आत्मा का निवास आपमें है। पूर्व जन्मों में आप सभी कर्मकाण्ड कर चुके हैं। इस जन्म में आपने केवल चित्त को आत्मा पर रखना है और यह कुण्डलिनी - आपकी अपनी 'आदि मां' की जागृति द्वारा ही संभव है। जब यह उठने लगती है तो सभी चक्रों को भेदती हुई उनका पोषण करती है, उन्हें संघटित करती है और सिर के तालू भाग (सहस्रार) का भेदन कर परमात्मा के प्रेम की सर्वव्यापी शक्ति से आपका सम्बन्ध जोड़ती है। परमात्मा के प्रेम की यह दिव्य शक्ति केवल प्रेम ही नहीं है यह शान्ति, आनन्द एवम् उच्च विवेक भी है। सामान्य मानव के लिए इसे समझ पाना अत्यन्त सूक्ष्म कार्य है। यह सब मैं जानती हूँ। लोग जानते हैं कि व्यक्ति आत्मा बन सकता है। यह विकास प्रक्रिया है। आज आत्मा बनने का समय है। बसन्त ऋतु का यह वरदान है। लोगों को आत्मा बनना है नहीं तो उनका अन्त न जाने क्या होगा । आज आत्मा बनना अत्यन्त आवश्यक है।

सभी सन्तों, पैगम्बरों, धर्मपरायण लोगों ने इसके विषय में बताया परन्तु हमने उनकी बातों को तोड़-मरोड़ करके भिन्न मत बना लिए । फिर भी एक सर्वसाधारण बात यह है कि आप आत्मा हैं और आत्मा बने बगैर आप शान्ति, आनन्द और प्रेम प्राप्त नहीं कर सकते । यहां उपस्थित सहजयोगियों ने यह सब प्राप्त कर लिया है। वह नहीं सोचते कि वे विदेशी हैं। इस देश के हैं या उस देश के । इस शिविर में सोने, खाने, नहाने आदि का अच्छा प्रबन्ध नहीं है फिर भी वे आनन्द ले रहे हैं। असुविधाओं की चिन्ता किसी को नहीं। नि:सन्देह किसी देश विशेष के कुछ संस्कार बचे हुए हों परन्तु वे भी छूट जाते हैं। शनै: शनै: ये कुसंस्कार उसी प्रकार झड़ने लगते हैं जैसे फल बनने पर फूल झड़ जाता है। फूल की सभी पंखुड़ियां झड़ जाती हैं और वह फल बन जाता है । अब आप भी फल बन गए हैं। ज्ञान, विवेक एवम् प्रेम के फल।

ज्ञान के लिए पुस्तकें पढ़ने की आपको कोई आवश्यकता नहीं, इसकी कोई आवश्यकता नहीं । अधिक पढ़े-लिखे लोगों को सहज में लाना कठिन कार्य है। आपको स्वयं मात्र इतना देखना है कि वास्तविकता क्या है? और यह साक्षात्कारी व्यक्ति बन जाने पर ही संभव है। अन्यथा आप विश्व के भ्रम में ही खो जाते हैं। भ्रमों में फंस कर संघर्ष करते हुए लड़ते हुए आप जीवन-यापन करते हैं और अन्त क्या होता है यह मैं नहीं कहना चाहती । सहजयोग में आकर आपकी विकास प्रक्रिया में एक विशेष चीज जो घटित हुई है वह है आपके चित्त का आत्मा पर चले जाना । आत्मा की शक्ति प्रापत होते ही आप स्वयं को हर क्षेत्र में सफल पाते हैं। आप कुछ नहीं चाहते, आप कुछ नहीं मांगते । फिर भी आपको सभी कुछ प्राप्त हो जाता है। कोई यदि आपके साथ ज्यादती कर दे तो भी आप बुरा नहीं मानते । सोचते हैं ठीक है, इसे भूल जाओ। तो छोटी-छोटी चीजों के लिए लड़ते रहने का, इनके लिए याचना करने को कोई लाभ नहीं । परन्तु इस स्थिति को पाने के लिए सभी को क्षमा करना आवश्यक है। हो सकता है कोई व्यक्ति असंगत हो, आपको हानि पहुंचाने का प्रयत्न करता हो, ठीक है मैं उसे क्षमा करता हूँ। वह मुझे सिरदर्द देने की कोशिश कर रहा है परन्तु मैं वह सिर दर्द नहीं लूंगा। मैं उसे क्षमा करता हूँ। यही महत्वपूर्ण बात ईसा ने कही थी कि आपको क्षमा करना होगा ।

मोहम्मद साहब ने भी बहुत कुछ बताया है । मेरी समझ में नहीं आता कि लोगों ने उनकी बातों को किस प्रकार तोड़ मरोड़ दिया ! ईसा ने बहुत कुछ बताया, उन्हें भी लोगों ने अपने हिसाब से परिवर्तित कर लिया । सभी ने एक ही बात कही कि, 'आपको आत्मा बनना होगा ।' परन्तु उनके कथनों को तोड़-मरोड़ कर बहुत से धर्म बना लिए । धर्म में लड़ने की क्या आवश्यकता है? यदि परमात्मा एक ही है तो धर्म के नाम पर झगड़ा नहीं होना चाहिए। अब सहजयोग में भिन्न स्थान, भिन्न देशों, भिन्न आदर्शों से लोग आते हैं। सहज योगियों की एक महान बात यह है कि वे पावन हैं, उनमें बहुत पवित्रता है। सजह योग में चरित्रहीनता की समस्या नहीं है कोई भी चरित्रहीन दिखाई नहीं पड़ता । चरित्रहीन, धोखेबाज, भ्रष्ट यदि कोई हो तो वह सुधर जाता है। क्योंकि आत्मा आपको स्वयं को देखने के लिए प्रकाश देती है कि आपके हित में क्या है। आप यदि चक्षुहीन हैं तो सड़क पर चलते हुए आप खड्डे में गिर सकते हैं परन्तु यदि आप अपनी आंखों से देख सकते हैं तो आप जानते हैं कि आपको किस प्रकार चलना है। सहजयोग में यही घटित हो रहा है लोग जान गये हैं कि किस प्रकार चलना है और किस प्रकार पतन से बचना है। मैंने पतित लोगों को भी देखा है परन्तु उनके लिए भी मेरे हृदय में प्रेम है, क्योंकि वे अन्धे थे । किसी भी अन्धे व्यक्ति के लिए आपके हृदय में प्रेम के अतिरिक्त क्या हो सकता है? कोई यदि मुझे गाली भी दे दे तो भी मैं उसे क्षमा कर देती हूँ क्योंकि वे नहीं जानते कि वे क्या कर रहे हैं। वे चक्षुहीन हैं। आप सत्य मार्ग पर खड़े हैं अत: किसी ने यदि आपको हानि भी पहुंचाई हो तो भी आप उसे क्षमा कर दें। तो दूसरी बात यह है कि आत्मा सत्य का स्रोत है असत्य का नहीं । उदाहरणार्थ यदि कोई कुगुरु है तो आप तुरन्त जान जायेंगे । कैसे? अपनी चैतन्य लहरियों से, अपनी अंगुलियों के सिरों पर कि यह व्यक्ति झूठा है। मोहम्मद साहब ने बताया है कि पुनर्उत्थान के समय आपके हाथ बोलेंगे । किसी भी कष्ट के समय वास्तव में ऐसा ही होता है। अत: यदि आप चाहें तो उस व्यक्ति को टाल सकते हैं और चाहें तो उसे मार्ग पर ला सकते हैं। परन्तु आरम्भ में हमें उलझे हुए चरित्र के लोगों को सुधारने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, नहीं तो वह आपको भी उलझा देंगे । लोग अब सहज योग में परिपक्व हो गये हैं और सुगमता से इन समस्याओं को सुलझा सकते हैं। हम यह भी जानते हैं कि सभी तत्व हमारे लिए कार्यरत हैं। विश्व की सारी घटनायें केवल यह दर्शाने के लिए हैं कि गलत चीजें तो गलत ही हैं और किस प्रकार अच्छे कार्य किये जाने चाहिए। उदाहरण के रूप में जब हिटलर आया तो उसने लोगों का वध करना शुरू कर दिया। अपनी सत्ता स्थापित करने के लिए उसने सभी प्रकार के उल्टे-सीधे कार्य किए जिन्हें भुलाया नहीं जा सकता । परन्तु उसकी मृत्यु हो गई और आज अचानक, आप देखते हैं कि जर्मनी के लोग कितने साक्षात्कारी हैं! मैं आश्चर्य चकित थी कि किस प्रकार लोग प्रेम एवं परमात्मा के विषय में प्रबुद्ध हैं। ये सभी देश, मैंने देखा है, बहुत अच्छी तरह चल रहे हैं। इतनी तो आशा भी नहीं की जा सकती । आप इग्लैण्ड की कल्पना कीजिए जो भारत आया और यहां तीन सौ वर्ष तक राज्य किया । आज वहां बहुत से सहजयोगी हैं और जब मैं प्रवचन देती हूँ तो सभागार लोगों से भर जाते हैं। यही चीज मैंने रूस जैसे देशों में देखी है जो कि प्रजातन्त्र होने के पश्चात् पतन के कगार पर थे । प्रजातन्त्र या साम्यवाद आदि तो केवल 'वाद' ही हैं उनसे बाहर निकल कर आपको देखना होगा कि यह प्रजातन्त्र राक्षसतन्त्र बन गया है और साम्यवाद भी असफल हो गया है। क्यों? मूलत: उनमें क्या दोष है? आध्यात्मिकता उनका आधार नहीं है। इनमें आध्यात्मिकता का कोई स्थान न था । यह सब बाह्य प्रयत्नों पर आधारित थे और यह प्रयत्न बहुत ही सीमित थे । एक बार जब यह सीमाएं टूट जाती हैं तो समस्या खड़ी हो जाती है। अब आप देखें कि विश्व का आर्थिक ढांचा चरमरा रहा है; हर जगह मन्दा है। वो यदि इतने विशेषज्ञ हैं तो फिर ये मन्दा क्यों है, ये समस्यायें क्यों हैं? लोग कहते हैं कि हमें गरीबी को दूर भगाना है, मैं सहमत हूँ। परन्तु उपहार दे कर नहीं, आत्म साक्षात्कार द्वारा आप यह कार्य कर सकते हैं। इच्छुक लोगों के पास जा कर सहजयोग द्वारा आप उन्हें वैभवशाली बना सकते हैं। आप हैरान होंगे कि वे स्वयं बेहतर कार्य करेंगे और गरीबी को दूर भगायेंगे । विदेशों में लोग पूछा करते थे कि श्री माताजी आप आध्यात्मिक जीवन के विषय में बात करती हैं, परन्तु भारत निर्धन क्यों है। मेरा उत्तर होता है कि आध्यात्मिकता में वे निर्धन नहीं हैं। धन के मामले में चाहे वे निर्धन हों। जिन लोगों के पास बहुत धन है क्या वे अच्छे लोग हैं? क्या वे कुछ अच्छा कार्य कर रहे हैं? इसी प्रकार जो लोग निर्धन हैं क्या वे कोई अच्छाई नहीं कर रहे ताकि उन पर करुणा की जा सके । जब दोनों ही तरह के लोग दु:खी हैं तो उन्हें परिवर्तित करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? जीवन के प्रति पूर्ण दृष्टिकोण ही परिवर्तित कर देना चाहिए । आत्म साक्षात्कार के पश्चात मैंने देखा है कि धनी लोग एकदम निर्धनता को समझने लगते हैं। वे अपना धन दूसरे लोगों के साथ बांटने लगते हैं और इस तरह से चीजें कार्यान्वित होने लगती हैं। सहज योग में, आप हैरान होंगे, किस प्रकार लोग एक दूसरे की सहायता करते हैं। किसी की भी कठिनाई या समस्या को किस सुन्दरता से वे दूर करने का प्रयत्न करते हैं ! परमात्मा की इस सर्वव्यापी शक्ति से हमें यह विवेक प्राप्त करना है। सभी धर्मों में इस शक्ति का वर्णन किया गया है। इसे 'निराकार', 'रूह', परम

चैतन्य, कहा गया है। आप इसे किसी भी नाम से बुला सकते हैं, नाम ही सभी कुछ नहीं है। एक बार जब आप इस शक्ति से जुड़ जाते हैं तो आशीर्वादित हो जाते हैं। हजारों बार आशीर्वादित होने के पश्चात आप एक सामान्य मानव बन पाते हैं। सामान्य मानव को उसके प्रयत्नों के अनुकूल ही फल प्राप्त होते हैं। परन्तु सहजयोगी को बहुत अधिक प्रयत्न नहीं करना पड़ता, स्वत: ही वह उस स्थिति में चला जाता है। वह शक्ति, वह दिव्य शक्ति आपको वहां तक ले आती है और यह बात आपने अपने जीवन में देखी है। किस प्रकार आप मेरे पास आये थे? किस प्रकार आप सहजयोग में आये? इसी दिव्य शक्ति ने यह सब कार्य किया । आप यह महसूस करें या नहीं परन्तु यह (शक्ति) सहज है। आत्मसाक्षात्कार के बाद आप अपने जीवन के विषय में सोचने मात्र से कि मैं किस प्रकार सहजयोग में आया, किस प्रकार मुझे यह प्राप्त हुआ, आपको लगेगा कि यह शक्ति आपके हृदय पर शान्ति, प्रेम एवम् स्नेह की वर्षा कर रही है। जैसा इन्होंने अभी कहा कि मेरे पास बहुत-सी शक्तियां हैं, हो सकता है, मैं नहीं जानती, परन्तु एक बात निश्चित है कि सहज योगी मेरी सभी शक्तियों को प्राप्त कर सकते हैं।

माँ सहजयोगियों को सभी कुछ देना चाहती हैं। अपने बेटे-बेटीयों को अपनी ही तरह से विकसित होते हुए देखना माँ के लिए महानतम आनन्द है। मेरे जीवन का एक महान् स्वप्न है और आज मैं उसकी स्पष्ट तस्वीर देख रही हूँ। मैं एक सर्वसाधारण गृहणी थी जिसके पास बहुत अधिक धन भी न था । आप जानते हैं कि धन में मेरी कोई रुचि नहीं है। बैंक मेरी समझ में नहीं आते, मेरा चैक कोई और हस्ताक्षर करता है और मेरे पति को मेरे लिए रुपये गिनने पड़ते हैं। इस मामले में मैं इतनी दुर्बल हूं । फिर भी मुझे कभी भी समस्या नहीं हुई -क्योंकि मानव के अन्तर्निहित लालच ही सभी समस्याओं को जन्म देता है। एक बार यदि व्यक्ति सबूरी सीख ले तो स्वत: ही लालच छूट जाता है और व्यक्ति पूर्णत: सुखी हो जाता है। परन्तु इसका अभिप्राय यह भी नहीं है कि आप लोग साधु-बाबा या सन्यासी बन जायें या सभी कुछ त्याग दें । त्याग के वे दिन चले गये हैं, वो सारे कष्ट आप सह चुके हैं। आप हिमालय में रह चुके हैं, सिर के भार खड़े रह चुके हैं और सभी प्रकार की तपस्याएं कर चुके हैं। अब इसकी कोई आवश्यकता नहीं है। अब आवश्यकता इस बात की है कि आप अपना चित्त आत्मा पर रखें। अपने अन्त:स्थित आत्मा पर जितना अधिक से अधिक आप अपने चित्त को रखेंगे, जितना बाह्य चीजों से चित्त को हटायेंगे उतना ही आप लाभान्वित होंगे । इसके लिए आपको बाहर से कुछ नहीं लाना पड़ता और न ही कुछ सीखना पड़ता है। यह आप सभी के अन्दर है, आपके हृदय में है। आपको इसे केवल महसूस करना है। यह भावना तभी आ सकती है जब आपकी कुण्डलिनी जागृत हो । मैं जानती हूँ कि मोहम्मद साहब, ईसा मसीह, अब्राहम या मोज़िज आदि, जिन्होंने धर्मग्रन्थों की सृष्टि की है, ने कभी भी नहीं सोचा था कि लोग आयोजित रूप से धर्म बना कर इस प्रकार चलने लगेंगे मानो वे एक दूसरे के विरोधी हों। परन्तु ऐसा हुआ । यह विरोध दूर करने के लिए आपको उन्हें ज्ञान देना होगा, शुद्ध ज्ञान, पुस्तकों का ज्ञान नहीं, शुद्ध ज्ञान । शुद्ध ज्ञान ही विवेक है। इसी विवेक से मैंने कार्य किया है। शैशव काल से ही मुझमें यह विवेक था किसी ने मुझे यह ज्ञान दिया नहीं-यह विद्यमान था । इसी विवेक ने मुझे सिखाया कि मानव की जो भी दशा हो, जो भी उसकी शैली हो, जितने भी उसमें अहम् और बन्धन हों, यदि वह प्रेम को महसूस कर सकता है तो उसकी आत्मा जागृत हो जाती है। यह परिवर्तन घटित हो चुका है।

विश्वभर में जिन लोगों ने आत्मसाक्षात्कार प्राप्त किया है उनका केवल एक प्रतिशत यहां उपस्थित है, परन्तु जो लोग आज यहां नहीं हैं मैं उन्हें जानती हूँ, और वे लोग मुझे याद हैं। वे साधक हैं और पागलों की तरह से उन्होंने सत्य को खोजा, इस साधना में उन्होंने बहुत से कष्ट सहे । उन्हें कई कुगुरु मिले और बहुत-सा धन उन्हें बर्बाद करना पड़ा। सभी कुछ उन्होनें किया परन्तु सहजयोग में आ कर ही वो सत्य को प्राप्त कर सके! सत्य बहुत सरल है कि आप आत्मा हैं। आप यह शरीर या बुद्धि नहीं हैं, आप आत्मा हैं। यही सत्य है। और उन्होंने आत्मा को प्राप्त कर लिया है। यही सत्य है और उन्होंने सत्य को पा लिया है। यह सत्य कि आप आत्मा हैं, जब आपके अन्दर स्थापित हो जाता है तो कुछ भी न तो आपको हानि पहुंचा सकता है और न ही आपका नाश कर सकता है। आपकी कोई इच्छाएं भी नहीं रह जातीं। जब आप आत्मा बन गये तो फिर आपको क्या इच्छा हो सकती है? आप में इतना सन्तोष आ जाता है! ऐसा व्यक्ति न तो किसी की भर्तस्ना करता है न किसी के पीछे दौड़ता है। वह सन्तुष्ट होता है, पूर्णत: सन्तुष्ट । मेरी तीव्र इच्छा थी कि मैं अत्यन्त सामान्य जीवन गुजारूं, हिमालयवासी सत्य साधकों की तरह से न बनूं क्योंकि आम लोगों के लिए सामन्य जीवन ही आवश्यक है। आज यह सामूहिक जागृति है। यह किसी व्यक्ति विशेष के लिए नहीं है। मान लो कोई आविष्कार होता है और यह किसी एक व्यक्ति के लिए है तो यह अर्थहीन है। यह जन-जन तक पहुँचना चाहिए । मैं जानती थी कि मुझे यह कार्य करना है। लोग कहते हैं कि मुझे इसके लिए कार्य करना पड़ा, परन्तु मैं नहीं सोचती मैंने कुछ किया । मैं तो इसकी एक साक्षी मात्र थी । एक साक्षी के रूप में हर चीज का आनन्द लेते हुए मैंने इसे देखा, बिल्कुल उसी तरह से जिस प्रकार समुद्र के तट पर बैठकर

आप लहरों को आते जाते देखते हैं। परन्तु व्यक्ति के अन्दर का मानव विकसित होना चाहता है, आत्मा बनना चाहता है। तब वह सोचने लगता है कि दूसरों का क्या हित कर सकता है। अभी तक मैं बहुत उत्सुक थी कि लोग सहजयोगी बनें। मैंने धर्मप्रचारकों या सामाजिक कार्यकर्ताओं का कार्य नहीं अपनाया । सहज योग शुरु करने से पूर्व मैं सामाजिक कार्य किया करती थी परन्तु बाद में मैंने महसूस किया कि लोगों को परिवर्तित किए बिना और आत्मा बने बिना आप भी अन्य सामाजिक कार्यकर्ताओं की तरह से हो जाएंगे । मैं एक अन्ध विद्यालय में कार्य करती थी, अन्ध विद्यालय की मैं अध्यक्षा थी । अपने साथ के लोगों को देखकर मैं हैरान थी कि वे किस प्रकार के अटपटे लोग हैं! गवर्नर आने वाले थे और वे सब कहने लगे कि गवर्नर के पास कौन बैठेगा? मैंने पूछा ये क्या है? वे कहने लगे कि अध्यक्षा होने के नाते आपको गवर्नर के समीप बैठना चाहिए। मैंने कहा कि यह आवश्यक नहीं है, मैं कहीं भी बैठ सकती हूँ। परन्तु इस बात को लेकर वे झगड़ने लगे । मैंने कहा ठीक है हम एक पलंग गवर्नर के सिर पर रख देंगे और चिड़ियों की तरह से उस पर बैठ जाएंगे । इस मजाक ने कार्य किया और वे सब शान्त हो गए। पदवी का अहम् मात्र मूर्खता है। चींटियां भी जानती हैं कि सामूहिकता में कार्य किस प्रकार करना है। मेरी समझ में नहीं आता कि किस प्रकार मानव बेवकूफी भरी चीजों के प्रति मरा जा रहा है! केवल एक ही कारण हो सकता है कि वह अभी आत्मा नहीं बना । यही कारण है कि वह अपना सम्मान नहीं करता और सभी अपमान जनक कार्य किए चला जाता है। मुझे लगा कि इस प्रकार का कार्य करने वाले लोग स्वयं को अति महान मान बैठते हैं। कोई अच्छा कार्य जब आप करने लगते हैं तो क्यों आप स्वयं को महान समझ लें? मेरी समझ में नहीं आता । इस मामले में मेरा मस्तिष्क बेकार है क्योंकि मुझे लगा कि मेरे साथ कार्य करने वाले ये लोग श्रेय लेने के लिए उत्सुक रहते थे। कोई अध्यक्ष बनना चाहता था तो कोई उपाध्यक्ष । मैंने कहा आप सभी कुछ बन जाइये । चित्त का पदोन्नति पर बने रहना वास्तविक पदोन्नति नहीं है। हर आदमी उन पर हंसा करता था। यह अवनति है। आपको उन्नति तो केवल आपकी आत्मा के माध्यम से ही हो सकती है। शारीरिक अस्तित्व बहुत बड़ी चीज है परन्तु आत्मा अत्यन्त सूक्ष्म और सुन्दर है और प्रकाश की तरह से आपमें निवास करती है। यह आपके अन्तर्निहित प्रकाश है।

बहुत से सहजयोगी अन्य लोगों को साक्षात्कार दे सकते हैं। कुछ लोग पूरे विश्व में जा रहे हैं। मैं हैरान थी कि पहली बार जब मैं रूस गई तो मेरी सहायता करने के लिए वहां जर्मनी और ऑस्ट्रिया से बहुत से सहजयोगी आए । मैंने पूछा आप यहां क्या कर रहे हैं! तो उत्तर मिला कि श्री माताजी हमें कुछ तो करना ही चाहिए क्योंकि हमारे पूर्वजों ने यहां के बहुत से लोगों की हत्या की थी । मेरा हृदय उन्हें धन्यवाद देने लगा । आप देखें कि उनमें क्या परिवर्तन आ गया है। तत्पश्चात् वे इज़राइल गए और वहां से बहुत से सहजयोगी मिस्र आए । मैंने इज़राइल के सहजयोगियों से पूछा कि आप यहां क्यों आए? तो वे कहने लगे कि श्रीमाताजी मिस्र के सहजयोगियों को मित्र बनाना हमारा कार्य है। आप ध्यान से देखें कि किस प्रकार प्रेम जीवन के सभी भेद-भावों तथा कांटों को निगल लेता है तथा इन्हें पूर्णतः समाप्त कर देता है। अपने प्रेम को दूसरों पर कार्यान्वित होते हुए देखना बहुत आनन्ददायी है। छोटी-छोटी और बड़ी-बड़ी चीजें, प्रेम से सभी कुछ कार्यान्वित हो जाता है। उदाहरणतः, कारखानों में हड़तालों की समस्या है, एक सर्वसामान्य संघर्ष है कि ऐसा होना चाहिए, ऐसा नहीं होना चाहिए । परन्तु यदि आप लोगों की आध्यात्मिक आवश्यकता के अनुसार उन्हें आध्यात्मिक बुलन्दियों तक उठा सकें तो, आप हैरान होंगे, किसी भी प्रकार की कोई समस्या न रह जाएगी । इसकी आज अत्यन्त आवश्यकता है। यह एक प्रकार का साम्यवाद है, एक प्रकार का समाजवाद है, एक प्रकार का प्रजातंत्र है। सारी चीजों के ताल-मेल से ही कार्य होता है। कुछ सहजयोगी इसका आयोजन करना चाहते थे । उन्होंने पूछा कि श्रीमाताजी हमें क्या करना चाहिए? मैंने कहा, मैं कुछ नहीं कहूंगी, आपकी जो इच्छा हो आप करें, जो आपको पसंद हो वो छांट लें और जो करना चाहें करें और मैं घर में पुष्प सजाने में व्यस्त हो गई, क्योंकि बहुत से फूल आए थे और मुझे इनकी चिन्ता थी। फूलों को ठीक-ठाक करते हुए मुझे पता चला कि उन सहजयोगियों ने सारा कार्य सुन्दरतापूर्वक कर दिया है। न कोई लड़ाई हुई, न झगड़ा, न कोई बहस, कुछ भी नहीं । किस प्रकार उन्होंने यह सब कर दिया? वैसे आप दस लोगों को साथ बिठा दें तो वे एकमत नहीं हो पाते । एक बोलेगा, दूसरा बोलेगा, बहस चलती रहेगी परन्तु परिणाम कुछ भी न होगा या फिर केवल एक ही व्यक्ति उस कार्य को करे अन्यथा कार्य हो ही न पाएगा । तो सहजयोग मानव के सारे वातावरण को, उसके दृष्टिकोण को, उसके प्रयत्नों को परिवर्तित कर देता है और सभी कुछ आनन्ददायी हो जाता है। यही प्रजातंत्र है। आप समाजवादी भी हैं क्योंकि आप पिछड़े हुए, धनहीन, दरिद्र लोगों के विषय में भी सोचते हैं और उनके लिए कुछ ऐसा कार्य करना चाहते हैं जिससे उन्हें कुछ पैसा मिल सके। अपने पिताजी के साथ एक मुकद्दमे के सिलसिले में मैं चांदा जिले जाया करती थी । वहां मैंने केवल एक वस्त्र पहने हुए लोगों को देखा । मेरे लिए यह आघात था। सर्दी हो या गर्मी, केवल एक वस्त्र! मैं रोया करती थी, मेरे पिताजी कहते, उनके लिए तुम क्यों रोती हो? मैं कहती - और मैं क्या कर सकती हूँ? उनकी बेहतरी के लिए मुझे कुछ करने का प्रयत्न तो करना ही चाहिए ।

अब जब इतने सहजयोगी हो गए तो मैंने उनसे बताया कि किसी पकार मैं इन लोगों की सहायता करना चाहती हूँ। वे मिट्टी के बर्तन बनाते हैं । तो उन्होंने कहा, श्रीमाताजी, ठीक है आप उनसे बर्तन मंगवाएं हम इन्हें बेचेंगे । आप हैरान होंगे कि अब इन लोगों के पास रहने के लिए घर हैं और अब ये अच्छी तरह से अच्छा जीवन बिता रहे हैं। तो, एक प्रकार से, यह समाजवाद है, कि आप समस्या को देखते है और सामूहिक रूप से इसका समाधान करना जानते हैं। सामूहिक रूप से, अकेले नहीं । सभी सहजयोगी इस बात की सलाह देते हैं कि श्रीमाताजी इसी प्रकार इस समस्या का समाधान हो सकता है। अभी तक मैंने स्वयं कोई संस्था आदि बनाने का कार्य नहीं किया है। अब जबकि हृदय में ध्यान करने वाले इतने सारे सहजयोगी हैं, मेरा चित्त उन लोगों पर जा रहा है जिन्हें हमारी सहायता की आवश्यकता है। अत: पहली बार मैंने उनसे आश्रय विहीन महिलाओं और बच्चों के लिए, जिन्हें उनके माता-पिता ने त्याग दिया है, एक गैर-सरकारी संस्था (NGO) बनाने के लिए कहा। आप हैरान होंगे कि तुरन्त हमें इसके लिए भूमि और कार्यकर्ता मिल गए । मेरा कहने का अभिप्राय है कि मैं कुछ भी नहीं कर रही हूँ। बहुत से लोगों ने मुझे लिखा है कि श्रीमाताजी यदि आपको भूमि चाहिए तो यहां आ जाइये । आप कल्पना कर सकते हैं कि गरीबों की सहायता के लिए मैंने केवल सोचा भर था । आपके पवित्र एवम् स्नेहमय चित्त से और भी बहुत से कार्य किए जा सकते हैं, क्योंकि प्रेम कार्य को करने के लिए विवेक प्रदान करता है। आपमें यदि प्रेम है तो यह आपको समस्या समाधान के प्रति अन्तर्दृष्टि प्रदान करता है। मेरे लिए यह आश्चर्यचकित कर देने वाली बात है। यद्यपि मैं सदैव प्रेम के माध्यम से ही कार्य किया करती थी, परन्तु सहजयोग के पश्चात् भी मैंने पाया कि प्रेम ही समाधान है। लोगों के हृदय में प्रवेश करने का हमारे सम्मुख केवल यही एक मार्ग है। परन्तु इस प्रेम के पीछे धन, उपलब्धियां, पुरस्कार आदि हमारा लक्ष्य नहीं होने चाहिए । प्रेम तो केवल प्रेम के लिए ही होना चाहिए । आज यही भावना आपको लाभान्वित कर रही है। आप सबको लाभान्वित कर रही है। जिस प्रकार आप सबको प्रेम करते हैं, जिस प्रकार आपने इतना कार्य किया है, आप नहीं जानते कि मैं कितनी कृतज्ञ हूं! अकेले मैं यह सब कार्य नहीं कर पाती । इतने देशों में मैं नहीं जा पाती । बैनिन जैसे दूरदराज स्थान पर मैं न पहुंच पाती । यहां मुसलमान लोग रहते हैं और इन सबने सहजयोग अपनाया है और प्रेम के सौन्दर्य को समझ रहे हैं। यह सारा कार्य फ्रांस के लोगों ने किया है। क्या आप कल्पना कर सकते हैं कि फ्रांस के लोग इतनी दूर जाकर ऐसा कार्य करेंगे ! अंग्रेज भी भिन्न देशों में गए, आस्ट्रिया, जर्मनी तथा इटली के लोग भी बहुत ही अच्छे किस्म के लोग हैं जिनके पास बहुत ही अच्छा हृदय है। उनके पास अत्यन्त विशाल हृदय है और जिस प्रकार वे सहजयोग को पूरी इटली में फैला रहे हैं वह प्रशंसनीय है। मैं हैरान हूँ कि किस प्रकार वे उन लोगों तक पहुंच जाते हैं जिन्हें आत्मा के विषय में कुछ भी ज्ञान नहीं और किस प्रकार वे उन लोगों को एकत्र करते हैं! हमें नशा बन्दी के लिए नहीं कहना पड़ता, हम नशीले पदार्थ सेवन के लिए मना नहीं करते । सहजयोग में कोई मनाही नहीं है। स्वत: सब बुराइयां छूट जाती हैं, मुझे नहीं कहना पड़ता कि ऐसा मत करो । स्वत: ही सारी बुराइयां छूट जाती हैं। इस बात पर आपको हैरानी होगी । एक बार एक कार्यक्रम में दीपक जलाने थे परन्तु किसी के पास माचिस तक न थी । क्या आप सोच सकते हैं-किसी के पास माचिस न थी । हजारों लोग वहां थे परन्तु किसी के पास माचिस न थी । मैंने कभी नहीं कहा 'ऐसा करो ऐसा मत करो', परन्तु सब कुछ हो गया । मैं नहीं जानती कैसे, किस प्रकार आपकी सारी बुराइयां छूट गईं! यह बड़ी सहज बात है। एक बार जब आप आत्मा के प्रकाश में आ जाते हैं तो आप कोई बुरा कार्य करते ही नहीं । सभी गुरुओं और पैगम्बरों ने शराब पीने को मना किया है। उदाहरणार्थ, सिखों और मुसलमानों को शराब न पीने की आज्ञा है। परन्तु उनमें से अधिकतर शराब पीते हैं क्योंकि वे सच्चे मुसलमान और सच्चे सिख नहीं हैं। यदि वे सच्चे होते तो शराब न पीते । तो यह किस प्रकार संभव है? व्यक्ति को आत्मा बनना पड़ता है। आत्मा के प्रकाश में व्यक्ति कोई भी विनाशकारी कार्य नहीं करता । इसके लिए किसी को बताने की आवश्यकता नहीं होती । अब आप सब लोगों को भी मैंने कभी किसी चीज के लिए नहीं रोका, परन्तु मैं हैरान थी कि लंदन जैसे स्थान पर भी लोगों ने रातों-रात नशे त्याग दिए । कई देश तो इस कार्य के लिए सेना का उपयोग करते हैं। परन्तु सहजयोग में आने के पश्चात् लोगों ने स्वत: ही वेश्यावृत्ति और नशे त्याग दिए । नैराश्य तथा अकेलेपन के दुख से अपनाए हुए सभी नशे उन्होंने त्याग दिए । सहज योग में आप कभी अकेले हो ही नहीं सकते । विश्व भर में आपके बहन भाई हैं। उन्हें यदि पता लगता है कि कोई आ रहा है तो उसे लेने के लिए वे सब हवाई अड्डे पर चले जाते हैं। यह सामान्य जीवन का भाई-चारा नहीं है। बहुत गहन भाई चारा है। इसमें अत्यन्त सूझबूझ है। ये लोग अत्यन्त गहन हैं। वे साधक थे और साधना करते हुए वे खलबली में फंस गए । उस स्थिति ने उन्हें गहन बना दिया । यह पुस्तक 'कुरान का प्रकाश' (Light of Koran) गिलमेट नामक एक महिला ने लिखी है, आप इसे पढ़ें । वह महिला बहुत गहन है। अत्यन्त सुन्दर एवम् आनन्ददायी ढंग से उसने अपनी अभिव्यक्ति इस पुस्तक में की है। वह मुसलमान नहीं है, उसने

एक तथाकथित मुसलमान से विवाह किया है क्योंकि वह सहजयोगी है और अत्यन्त सुन्दर ढंग से अपनी साधना का वर्णन किया है। सहजयोग में बहुत से महान् लेखक हैं जिन्होंने अच्छी-अच्छी पुस्तकें लिखी हैं। गिलमेट बहुत लजीली है वह प्राय: बात नहीं करती। मौन रहती है। परन्तु अपनी सत्य साधना के कारण अन्तस में वह बहुत गहन है।

इस विश्व में बहुत से लोग सत्य की खोज कर रहे हैं। वे आधुनिक विश्व की मूर्खताओं को सहन नहीं कर सकते और अत्यन्त संवेदनशील हैं। इसी प्रकार आप सबको आत्मसाक्षात्कार प्राप्त हुआ । इसमें मेरा कुछ नहीं है। ये कहना उचित न होगा कि मैंने यह कार्य किया है। आप यदि दीपक न होते तो मैं आपको प्रकाशित न कर पाती । मैं आपके प्रति कृतज्ञ हूँ और जो भावनाएं आपके हृदय में सहजयोग के लिए हैं उससे मैं बहुत प्रसन्न हूँ । आपको सामूहिक रूप से पूरे विश्व में सहजयोग कार्यान्वित करना है। आपने एक दूसरे की सहायता करनी है और लोगों को बढ़ावा देना है। विश्व भर में एक ऐसे मस्तिष्क का विकास करना है जो आत्मा की ओर हो ! यह कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण है। तभी हम सभी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे । मैं यदि कहूँ कि मैं गरीबों के लिए कोई योजना बना रही हूँ तो तुरन्त वे सब मुझे धन भेज देंगे, तुरन्त खोज निकालेंगे कि कौन इस कार्य को कर सकता है तथा कौन श्रीमाताजी की सहायता कर सकता है। उन्हें हम क्या कार्य दे सकते हैं? किस तरह से हम इसे कार्यान्वित कर सकते हैं? यह तेजी से फैलता है। मुझे केवल कहना भर पड़ता है। धन के लिए मुझे कभी नहीं कहना पड़ता । मैंने कभी नहीं कहा कि मुझे धन चाहिए। परन्तु अविलम्ब वे सारी योजना बना लेते हैं और सभी कुछ लाकर कार्य को कार्यान्वित करते हैं। भारत में भी ऐसा हो सकता है। कहीं भी ऐसा हो सकता है। दिलचस्पी केवल भारत में ही नहीं है, समस्याओं के समाधान में ही उनकी दिलचस्पी है। यह कोई दिखावा करना या धर्म-सम्प्रदाय बनाना नहीं है।

यह अन्तर्जात गुण है जोकि अत्यन्त सूक्ष्म है, प्रभावशाली है। सहजयोग के लिए कार्य करने में उन्हें आनन्द मिलता है। कभी-कभी तो मैं हैरान होती हूँ कि पूरे विश्व के लिए इतने प्रेम की भावना उनमें किस प्रकार है! किस प्रकार वे पूरे विश्व की चिन्ता करते हैं और किस प्रकार विश्व भर के लिए कार्य करने के लिए तैयार हैं! नि:सन्देह सभी देशों की अपनी-अपनी समस्याएं हैं, जैसे उत्तर भारतीय लोगों की दिलचस्पी सदैव राजनीति में ही होती है क्योंकि दिल्ली समीप है। परन्तु अब यह दिलचस्पी कम हो गई है बहुत कम। अब वे किसी के विरुद्ध कुछ सुनना नहीं चाहते । यह अच्छी बात है। दक्षिण में, नर्मदा नदी से परे, महाराष्ट्र आदि में बहुत कर्मकोण्डी लोग हैं। थाली में वे बताएंगे कि नमक कहां रखना है, सब्जी कहां रखनी है, ताकि एक अन्धा व्यक्ति भी अच्छी तरह से खाना खा सके । आपको केवल एक हाथ से खाना खाना है दूसरा हाथ नहीं लगाना है। वे अत्यन्त कर्मकाण्डी हैं। इन्हीं चीजों के कारण वे सहजयोग में बढ़ नहीं पाते । जो भी हो हमें यह समझना है कि यह चीजें अभी तक हमें जकड़े हुए हैं। मैं कहती हूँ कि उत्तर भारत में यदि कोई किसी के विरुद्ध कहे तो आप अपने कान बन्द कर लीजिए। गांधी जी का यह नियम ठीक था । व्यर्थ की बात को कभी मत सुनो । समाचार पत्रों के कारण भी चुनावों से पूर्व अवांछित गप्पें सुनने को मिलती हैं। यह सब व्यर्थ की बातें हमारे मस्तिष्क को प्रभावित करती हैं। अत: मैं सभी उत्तर भारतीय लोगों से अनुरोध करती हूँ कि कभी भी किसी की आलोचना न सुनें । इसका क्या लाभ है? मस्तिष्क से सोचें। किसी की आलोचना सुनने का क्या लाभ है? इससे आपको क्या मिलता है? यही बात किसी अन्य को सुनाने का क्या लाभ है? सदैव एक प्रश्न करें कि इसका क्या लाभ है? किसी में दोष क्यों देखें? इस तरह से आप धोखा खा सकते हैं। परन्तु कोई बात नहीं। किसी भी प्रकार की गन्दगी अपने मस्तिष्क में न भरें। ऐसे बहुत से लोग हैं जो इधर उधर बातें करके समस्याएं पैदा करते हैं। इससे आपको कोई हानि नहीं पहुँच सकती क्योंकि आप आत्मा हैं और आत्मा को कोई हानि नहीं पहुँचाई जा सकती । आत्मा का नाश नहीं किया जा सकता । शस्त्र से इसे काटा नहीं जा सकता । आत्मा अमर है। तो आत्मा पर चित्त की कमी है। आप कह सकते हैं आत्म-विमुख स्थिति । हमारी दृष्टि व हमारा चित्त आत्मा पर न होने के कारण सभी समस्याएं हैं।

एक बार जब आपका तदात्मय आत्मा से हो जाएगा तो सभी कार्य हो जाएगा क्योंकि आत्मा सर्वशक्तिमान परमात्मा से जुड़ी होती है। सभी कुछ कार्यान्वित करने वाली सर्वव्यापी शक्ति से इसका सम्बन्ध होता है। मैं इस सर्वव्यापी शक्ति को जानती हूँ। इसी में मेरे बहुत से चमत्कारिक फोटो दिखाए हैं। यद्यपि मैंने इसे यह सब करने के लिए नहीं कहा फिर भी यह ऐसा कर रही है। वास्तव में यह अत्यन्त चुस्त है और किसी भी सूक्ष्म एवं गहन व्यक्ति को जब यह देखती है तो यह कार्य करती है। आपके व्यपार में, राजनीति में, परिवार में, सभी जगह इस प्रकाश को आप देख सकेंगे और अन्य लोगों की भावनाओं का सम्मान करेंगे । अन्य लोगों को आप प्रेम करेंगे और उनका सम्मान करेंगे । दूसरे के अन्दर चमकती हुई आत्मा का आप सम्मान करेंगे । आपकी आत्मा क्योंकि प्रकाशित है इसलिए आपने अन्य लोगों का सम्मान करना सीख लिया है। यह बात मैं स्पष्ट देख सकती हूँ। मेरे जन्मदिवस पर आप सबको यहां देख कर मैं बहुत प्रसन्न हूँ।

मैं नहीं जानती कि जन्मदिवस का क्या महत्व है। जो भी हो एक बात अवश्य है कि इस प्रकार यहां उपस्थित आप सभी सजहयोगियों से मैं मिल सकती हूँ। मैं बहुत प्रसन्न हूँ। यहां उपस्थित हमारे समाज के इन श्रेष्ठ लोगों की मैं धन्यवादी हूँ। ये बहुत महान लोग हैं। जनता द्वारा चुने हुए हैं कई बार इनको उच्च पद दिए गए और इनमें से कुछ सुप्रसिद्ध उद्यमी हैं। इन सबको आध्यात्मिक जीवन का मूल्य समझना है। इनके लिए यह महत्वपूर्ण है। इन्हें आत्मा से जुड़ना है। यह आपकी अपनी सम्पति है, आपके अन्त: स्थित है। मैं कहूँगी कि आत्मा बनना ही आपकी पूर्ण गरिमा है। मेरी समझ में नहीं आ रहा कि किस प्रकार मैं आप सबको धन्यवाद दूं और किस प्रकार इतने अच्छे वक्ताओं को धन्यवाद दूं! मैं तो आध्यात्मिक जीवन में आपकी महान उन्नति की कामना करती हूँ। आध्यात्मिकता में आपकी आत्मोन्नति, ताकि विश्व के हर कोने पर यह छा जाए और भविष्य के सुन्दर विश्व की सृष्टि करें।

परमात्मा आपको धन्य करें।

❄ ❄ ❄

75वां जन्मदिवस

अन्तत: चिर प्रतीक्षित दिवस, जगत जैननी का 75वां जन्मदिवस आ पहुंचा । 21 मार्च 1998 के ब्रह्म मुहूर्त में ज्योंही अभिनन्दन कार्यक्रम समाप्त हुआ, युवा शक्ति के लड़के-लड़कियां मंच को माँ आदिशक्ति-सर्व कलाओं एवं सौन्दर्य की सृष्टा-के बैठने योग्य बनाने में जुट गए । हे देवी आपके श्री चरणों की धूल के एक कण से पुष्पोद्यानों की सृष्टि होती है। अविद्या में पड़े लोगों के लिए यह विवेक का स्रोत है। दरिद्रियों के लिए चिन्तामणि की माला है।

इन्द्रधनुषी गुब्बारों, सुन्दर फूलों एवं चमचमाती रोशनियों से सभागार का कोना-कोना सुन्दरतापूर्वक सजाया गया । निजामुद्दीन मैदान के मुख्य द्वार से लेकर पंडाल के प्रवेश द्वार तक मार्ग के दोनों ओर सुन्दर मोमबत्तियां एवं दीपक जलाए गए । अपनी परमेश्वरी मां का स्वागत करने के लिए हवामहल द्वार पर नन्हें-नन्हें बच्चे सुन्दर परिधानों में देवदूतों सम नृत्य कर रहे थे । निजामुद्दीन चौक पर विश्व के भिन्न देशों से आए सहजयोगी अपने राष्ट्रीय ध्वज लिए हुए मां आदि शक्ति के स्वागत के लिए तत्पर थे तथा बैंड सहज धुनें बजा रहा था। यह दिव्य जुलूस गरिमामयी श्रीमाताजी को सभागार तक लाया। ज्योंही श्रीमाताजी ने स्काउट मैदान मे प्रवेश किया भारतीय पारम्परिक शैली में शहनाई एव बिगुल बजाए गए । अपने बच्चों का प्रेम देखकर स्नेहमयी मां गद्‌गद् हो गयीं।

✦ ✦ ✦

जन्मदिवस पूजा - 1998

दिल्ली - 21-3-1998

परम पूज्य माताजी श्री निर्मला देवी का प्रवचन

जिस प्रकार आपने मेरा स्वागत किया उसे देख कर मैं गद् गद् हो गई हूँ। मैं कहूँगी कि आपका प्रेम ही सहजयोग का आनन्द लेने की सभी प्रकार की अभिव्यक्तियां खोज निकालता है। वास्तव में मैं नहीं समझ सकती कि यह अद्वितीय विचार किस प्रकार आपके मस्तिष्क में आते हैं और आप अपने भिन्न देशों का प्रतिनिधित्व करते हैं !

मैं कामना करती हूँ कि आप अपने ये राष्ट्रीय ध्वज अपने अपने देशों में ले जाएं और वहां सन्देश दें कि पुनर्उत्थान का समय आ गया है, कि हमें उठना है; हमें मानव स्तर से अपने अस्तित्व के उच्च स्तर तक उन्नत होना है। यदि ऐसा घटित हो गया तो आप देखेंगे कि किस प्रकार यह आपके जीवन को परिवर्तित कर देता है, किस प्रकार यह आपको प्रसन्नता प्रदान करता है ! किस प्रकार घृणा और दूसरों को चोट पहुंचाने, दूसरों का अहित करके अपने मूर्खता पूर्ण विचार आप त्याग देते हैं। इस प्रकार के विचारों ने बहुत से लोगों को परपीड़न द्वारा प्रसन्नता दी है और अन्य लोगों की खुशी एवम् आनन्द का नाश करके उन्होंने सुख उठाया है। अपनी प्रसन्नता को बनाये रखने के लिए मैं जानती हूँ कि सहजयोगी होने के नाते, आपको बहुत कुछ सहन करना होगा, बहुत सी मूर्खता सहन करनी होगी । आप ऐसा कर चुके हैं और शनैः शनैः एक बार सहजयोग जब सुन्दरतापूर्वक पावनता के रूप में आपके देशों में स्थापित हो जायेगा तो आपके देशों के अन्य लोग भी उस पथ पर चलने लगेंगे जिस पर आप चल चुके हैं। केवल आपके जीवन ही आपके आन्तरिक सौन्दर्य और सहजयोग को प्रतिबिम्बित कर सकते हैं।

कल मैंने आपको बताया था कि मानवीय चेतना में किस चीज का अभाव है और यह भी कि चित्त आत्मा पर नहीं है। जब चित्त आत्मा पर होगा तो सर्वप्रथम आप 'गुणातीत' हो जायेंगे-आप गुणों से ऊपर उठ जायेंगे । इसका अभिप्राय यह है कि अब आप 'तमोगुणी'- इच्छाओं और लिप्साओं से लिप्त-व्यक्ति नहीं रहे । वहां से आपका चित्त दूसरी शैली पर चला जाता है जहां आप 'रजोगुणी', आक्रामक हो जाते हैं। आप दूसरों से स्पर्धा करना चाहते हैं। यह संघर्ष अनुशासन है। 'अतीत' का अर्थ है परे । तत्पश्चात आप 'सत्वगुणी' हो जाते हैं। इस स्थिति में आप सत्य साधना करते हैं और देखते हैं कि इस प्रकार के प्रचण्ड आचरण में क्या गलती है और इस प्रकार के उग्र जीवन से घृणा करने लगते हैं। इससे मुक्ति पा कर आप सत्य साधना की ओर चल पड़ते हैं । यह स्थिति भी समाप्त हो जाती है और आप गुणातीत हो जाते हैं । ऐसा तब घटित होता है जब आपका चित्त आत्मा पर ज़ाता है, क्योंकि अब आपका चित्त आपके जन्मजात बन्धनों, गुणों तथा अहम् पर नहीं होता । तो आप इन सब से ऊपर उठ जाते हैं। सामान्य जीवन के लिए यह अत्यन्त असाधारण बात है परन्तु आपके लिए नहीं । यह स्वतः ही घटित हो जाता है और आप अपने अस्तित्व का आनन्द लेते हैं। अब आपको अपनी सुख सुविधाओं एवं छोटी-छोटी चीजों की चिन्ता नहीं रहती । अभी तक ये तीन गुण जो किसी न किसी प्रकार से आप पर शासन करते थे आप इनसे ऊपर उठ जाते हैं। अतः इस प्रकार आप मानवीय चेतना की सीमायें पार कर लेते हैं। तब दूसरी स्थिति में आप 'कालातीत' हो जाते हैं, आप समय से ऊपर उठ जाते हैं। मैं जानती हूं कि आज मुझे आने में देर हुई, ऐसा हो जाता है। परन्तु समय का आप पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा । मुझे देर होने के बावजूद भी आप आनन्द ले रहे हैं, घर में बैठी हुई मैं देख रही थी कि आप सब अत्यन्त आनन्द की स्थिति में हैं। आप सभी बहुत आनन्द में हैं, मेरी अनुपस्थिति में भी आप आनन्द ले रहे हैं। यह समय से ऊपर होना है। समय के पाश में आप नहीं हैं। जो भी समय है आपका अपना है क्योंकि आप वर्तमान में स्थित हैं। यहां खड़े हो कर आप भविष्य के बारे में नहीं सोच रहे; आप यह नहीं सोच रहे कि कल क्या होगा या किस प्रकार आप वायुयान पकड़ेंगे-या किस प्रकार कार्य करेंगे । यहां पर आप केवल आनन्द ले रहे हैं, वर्तमान का आनन्द ले रहे हैं, और वर्तमान ही वास्तविकता है। यदि आप भूत या भविष्य के विषय में सोच रहे होते तो आप वास्तविकता में न होते । मैंने बहुत बार बताया है कि भूतकाल समाप्त हो गया है और भविष्य का कोई अस्तित्व नहीं है। इस क्षण आप यहां हैं, हो सकता है मेरी प्रतीक्षा में बैठे हों, हो सकता है यहां अपनी यात्रा के हर क्षण तथा मुझसे अपने योग का आनन्द ले रहे हों। इस आनन्द का वर्णन नहीं किया जा सकता कि किस प्रकार आप यह आनन्द ले रहे हैं।

अन्यथा लोग घड़ी देख रहे होते और हैरान हो रहे होते कि श्रीमाताजी क्यों नहीं आई ! क्या समस्या है, वे क्यों नहीं पहुंचीं? आदि आदि । यह स्थिति कालातीत होने में बहुत सहायक है।

मुझे याद है कि नासिक में सहज कार्य करने के लिए कोई सहजयोगी आगे न आता था, इस लिए वहां मुझे बहुत परिश्रम करना पड़ा । वे लोग अत्यन्त संकोची और चिन्ताशील थे । भाग्य से या दुर्भाग्य से एक बार ऐसा हुआ कि रास्ते पर मेरी कार खराब हो गई और पहुँचने में मुझे लगभग एक घंटा देर हुई । उधर से कोई कार भी नहीं आई और हम रास्ते में ही अटक गये । जिस कार्यक्रम में हम जा रहे थे, जब हम वहां पहुँचे तो देखा कि सहजयोगियों ने बागडोर सम्भाल ली थी । जिम्मेदारी सम्भाल कर वे लोग जनता को आत्मसाक्षात्कार देने में व्यस्त थे । यदि मैं समय पर पहुँच गई होती तो वे ऐसा न करते । उन्हें विश्वास ही न होता कि उनके पास आत्मसाक्षात्कार देने की शक्ति है। मेरे कहने पर भी वे अपने हाथ न चलाते थे। परन्तु अचानक मेरे अनुपस्थित होने के कारण उन्होंने अपनी जिम्मेदारी संभाली । अत: जब आप समय से ऊपर होते हैं तो उस क्षण के लिए आप जिम्मेदार हो जाते हैं और यह जिम्मेदारी सामूहिक है अर्थात् आप सब जिम्मेदार बन जाते हैं।

बहुत हैरानी की बात है कि हम इतने सारे लोग यहां हैं परन्तु न कोई लड़ाई है न कोई झगड़ा । एक दूसरे पर हावी होने के मूर्खतापूर्ण विचारों से ऊपर उठकर हम बहुत अच्छी तरह से स्थापित हो गए हैं। समय में लिप्त न होने के कारण ऐसा घटित होता है। समय आपको झुका नहीं सकता। सम्भवत: आप महसूस करते हों कि यदि आप लोगों के स्थान पर कोई अन्य होता तो देर से आने के कारण वे मेरी कार पर पत्थर फेंकते, सोचते कि हम तो गर्मी में सड़ रहे हैं और अपना क्रोध व्यक्त करते । परन्तु जो लोग समय से ऊपर उठ चुके हैं वे ऐसा नहीं कर सकते, आराम से बैठकर वे आनन्द ले रहे हैं।

तत्पश्चात् आप धर्मातीत हो जाते हैं। आप समय से ऊपर उठ जाते हैं, अपने मानवीय स्वभाव से ऊपर उठ जाते हैं। इसका अभिप्राय यह है कि जो भी कार्य आप करते हैं वह धार्मिक होता है, आपके सभी प्रयत्न धार्मिक होते हैं। यदि आप व्यापार करते हैं तो उसे भी धर्मानुकूल करने का प्रयत्न करते हैं, क्योंकि आप धर्म से ऊपर उठ गए हैं। किसी धर्म विशेष का तरीका या कर्मकाण्ड अपनाने की चिन्ता आप नहीं करते । आप इससे ऊपर हैं। उदाहरणार्थ धर्म में फंसे लोग समझते हैं कि उन्हें प्रात: बहुत जल्दी उठना चाहिए वे कर्मकाण्डों के पाश में फंसे हैं, वे कर्मकाण्ड करते हैं और यदि कर्मकाण्ड में कोई कमी रह जाए तो वे दु:खी हो जाते हैं और घबरा जाते हैं । परन्तु आपके साथ यह बात नहीं है क्योंकि आप तो हमेशा ध्यान में होते हैं, सदैव ध्यान धारणा की स्थिति में होते हैं। कोई गड़बड़ी भी यदि हो जाए तो तुरन्त आप चेतना (निर्विचार समाधि) में चले जाते हैं जहां आपको सारे समाधान प्राप्त हो जाते हैं। आप परेशान नहीं होते, बिल्कुल परेशान नहीं होते । यदि कुछ गड़बड़ हो जाए तो कर्मकाण्डी स्वभाव व्यक्ति को अत्यन्त संकुचित तथा विनम्र बना देता है, और कभी-कभी बहुत आक्रामक भी बना देता है।

अपने कर्मकाण्डों से लोग अन्य लोगों को बहुत कष्ट देते हैं, जैसे मित्र कहलाने वाली एक महिला हमारे घर पर आई। कहने लगी मैं शाकाहारी हूँ। मैंने पूछा तो? "मैं उन बर्तनों में बना हुआ खाना नहीं खा सकती जिनमें मांसाहारी खाना बनाया गया हो।" तो हमें उसके लिए नए बर्तन खरीदने होंगे । मैं जाकर उसके लिए नए बर्तन लाई । कहने लगी ध्यान रखना, एक पुराना चम्मच भी उपयोग नहीं होना चाहिए। तो मुझे जाकर नए चम्मच खरीदने पड़े । फिर उसने नए ग्लास मंगवाए । तो मुझे यह सारा कष्ट भुगतना पड़ा । रसोई में वो खुद खड़ी हो जाती और रसोईये को हमारे लिए कुछ न बनाने देती । कहती पहले मैं अपना खाना बनाऊंगी फिर तुम आना । उसने इतनी परेशानी खड़ी कर दी कि अतिथि होने के स्थान पर वह क्लेश बन गई । कर्मकाण्डी लोगों के साथ ऐसा ही होता है क्योंकि उनकी मांगे बहुत बढ़ जाती हैं। धर्म के नाम पर वे कुछ न कुछ मांग करते ही रहते हैं।

बम्बई में मुझे किसी ने एक और कहानी सुनाई थी । उसने कहा कि उच्च पदासीन व्यक्ति से सम्बन्धित जो महिला अतिथि बनकर मेरे घर आई थी वह तो मेरी परदादी से भी गई गुजरी थी । कहने लगी मैं नहीं समझ सकती कि भारत में अभी तक भी ऐसे लोग रहते हैं ! वह यहां आई और कहने लगी कि मैं नल से पानी नहीं ले सकती । मेरे लिए आपको कुएं से जल लाना होगा । बम्बई में केवल दो कुएं हैं। लोगों को उनपर जाकर जल लाना पड़ा । उनके लिए खाना बनाने वाले रसोइये को कपड़ों समेत पानी में डुबकी लगाकर खाना बनाना पड़ता था । यदि रसोइया पानी में भीगा हुआ न होता तो वे उसके हाथ का बना हुआ खाना न खातीं। बेचारे रसोइये को निमोनिया हो गया । दूसरा रसोइया आया और उसे फ्लू हो गया । परन्तु इस महिला ने चिन्ता न की। कहने लगी मेरी यही शैली है। लोगों ने मुझसे पूछा कि श्रीमाताजी ऐसे लोगों का हम क्या करें? मैंने कहा आपको उससे कहना चाहिए था कि हमारे पास अमुक चीज है, आप खाना चाहें तो खा लें। व्रत करना अच्छा है। आत्म केन्द्रित, दूसरों को तंग करने वाले लोगों का यही इलाज है।

तो यह आत्मकेन्द्रिता हममें इसलिए आती है क्योंकि

हम सोचते हैं कि यह हमारा धर्म है, यह हमारा अधिकार है और सभी कुछ हमारा है। यह कार्य न करने की हिम्मत इन लोगों की कैसे हुई? हम लोगों को कितना कष्ट देते हैं, कितना दु:खी करते हैं! कितना हम उन्हें दयनीय बनाने का प्रयत्न करते हैं! यह बात हम नहीं जानते और वस्तुओं की मांग किए चले जाते हैं। यह मेरा धर्म है, मैं क्या करूं ? मुझे ऐसा ही करने दें । परन्तु यह मस्तिष्क का बन्धन बन जाती है। सहजयोग में भी मैंने बहुत से लोगों को बन्धनग्रस्त देखा है।

एक फ्रांसिसी महिला सहजयोग में आई । आरम्भ में उसकी मां बहुत ही कर्मकाण्डी थी । वह इतनी कष्टदायी थी कि हर रविवार चर्च जाना उसके लिए आवश्यक था । अच्छे-अच्छे वस्त्र पहनकर वह चर्च जाती और वापस आ जाती । एक दिन वह गायब हो गयी । ये पुलिस के पास गए और उसे खोजने के लिए कहा । लेकिन पुलिस ने खोजने से इन्कार कर दिया । परमात्मा जाने वह कहां गायब हो गई । तब उसने कहा उसे चर्च में खोजो । जब चर्च में जाकर देखा गया तो वह अभी तक वहां बैठी हुई थी । तीन-चार बार ऐसा हुआ । तंग आकर पुलिस ने कहा कि बार बार हम इसे नहीं खोज सकते । आप चाहें तो इसे वृद्ध-आश्रम भेज दें । इस सहजयोगिनी ने मुझे बताया कि श्रीमाता जी आश्चर्य की बात यह है कि ये लोग अत्यन्त मूर्ख किस्म के हैं, बैठकर पागलों की तरह से बातें करते हैं, बुढ़ापा उनसे छलकता है परन्तु रविवार के दिन अच्छे-अच्छे परिधान पहनकर वे चर्च जाते हैं। केवल इसी मामले में वे समझदार हैं। उनके बन्धन किस प्रकार कार्य करते हैं यह हैरानी की बात है। एक व्यक्ति हमारे पास आकर रुका, कहने लगा, 'मैं बहुत अच्छा ड्राइवर हूँ' मैंने कहा ठीक है। वह केवल गाड़ी चलाना ही जानता था। लन्दन की सड़कों का उसे ज्ञान न था । मुझे यदि उत्तर को जाना होता तो वह दक्षिण की ओर ले जाता और पूर्व को जाना होता तो पश्चिम को ले जाता । मैंने पूछा क्या बात है? आप तो गाड़ी चलाना जानते हैं। कहने लगा, 'हां गाड़ी चलाना मैं जानता हूं परन्तु मुझे सड़कों का ज्ञान नहीं।" एक दिन मैं गाड़ी में बैठी थी और वह चला रहा था । पुलिस ने गाड़ी रोकी और उससे पूछा कि कहां जा रहे हो । उसने बताया । तो पुलिस वाले ने पूछा कि छः बार आप इसी स्थान पर क्यों आए और अब फिर तुम यहीं आ रहे हो ! मेरी समझ में आया कि वृद्धावस्था में यह चीजें आदत सी बन जाती हैं। परन्तु युवावस्था में भी लोग अपनी शैली के बन्धन में फंस जाते हैं। इसे आप मानवीय दुर्बलताएं कह सकते हैं जिनमें आप लिप्त हो जाते हैं या किसी भी चीज के प्रति आपमें चिपकन हो जाती है। इस प्रकार चीजों की मांग करना पागलपन है। यह मुझे अच्छा नहीं लगता और इसका कोई अन्त भी नहीं है। किसी के घर जाकर लोग कहेंगे, 'नहीं-नहीं, यह कालीन मुझे पसन्द नहीं'। यह आपका कालीन नहीं है। आपने इसे नहीं खरीदा । उस व्यक्ति ने उसे खरीदा है। इससे आपका क्या सरोकार है। मुझे पसन्द नहीं है। आप कौन हैं? जिसने इसके लिए पैसे खर्चे हैं उसे यह पसन्द है। समाप्त। आप क्यों टिप्पणी करते हैं। क्या आप समीक्षक हैं?

मान लो किसी ने एक विशेष प्रकार के बाल बनाए हुए हैं। मुझे इस तरह के बाल पसन्द नहीं हैं। क्यों? मुझे पसन्द नहीं है। बस और यह बात पूरे में फैल जाएगी। पसन्द या नापसन्द करने वाले आप कौन होते हैं। क्या पदवी है आपकी? आप क्यों कहें कि मुझे पसन्द है या नहीं? परन्तु पश्चिम में इस प्रकार की टिप्पणी करना आम बात है। मुझे पसन्द नहीं है, मुझे भारत पसन्द नहीं है । ठीक है तुम्हें भारत पसन्द नहीं है तो घर बैठो, यहां क्यों आए हो? मुझे तुर्की पसन्द नहीं है। क्यों? क्योंकि मान लो किसी ने लम्बा स्कर्ट पहना हुआ है तो वह कह उठेंगे कि मुझे यह पसन्द नहीं है क्योंकि यह तुर्किस्तानी है। तो अब आपके छोटे स्कर्ट पहनने चाहिएं। हमें छोटे स्कर्ट पसन्द नहीं हैं फिर भी यह नहीं कहना चाहिए कि, 'मुझे पसन्द नहीं है।' इससे दूसरों को चोट पहुंचती है। दूसरे व्यक्ति के गर्व को यह तोड़ देता है।

अब जब आप सहजयोग में हैं तो सामान्य मानदण्डों के अनुसार आप सामान्य मानव नहीं हैं। आप उनसे ऊपर हैं। आपकी पसन्द, नापसन्द उनसे भिन्न है और आपका पूर्ण दृष्टिकोण परिवर्तित हो चुका है। कई बार तो मुझे लगता है कि आप बच्चे हैं। कभी तो आप नन्हें बच्चों की तरह से अत्यन्त अबोधितापूर्वक बातें करते हैं और कभी अत्यन्त गहन चीजों के बारे में बात करते हैं। सामान्य मानव यह सब नहीं जानता क्योंकि आम आदमी, आप जानते हैं, अत्यन्त आडम्बरपूर्ण होता है। हर समय वह मैं-मैं-मैं करता रहता है। कबीर साहब ने कहा है कि बकरी जब जीवित होती है तो मैं-मैं-मैं करती रहती है परन्तु मरने के उपरान्त उसकी आंत को जब रुई पींजने वाली धुनकी पर लगाया जाता है तो वह कहती है,'तूही-तूही-तूही' अर्थात् आप ही हैं-आप ही हैं, आप ही सभी कुछ हैं। ज्यों ही आप ऐसा कहते हैं तुरन्त आपका चित्त अन्य लोगों से, उनके दोष ढूंढने से, उनकी आलोचना करने से, उनका मजाक करने से दूर चला जाता है। कभी-कभी तो लोग दूसरों की बुराई करने तथा झूठ-मूठ की गप्प हांकने का भी आनन्द लेते हैं। ऐसा वे इसलिए करते हैं क्योंकि वे नहीं जानते कि दूसरा व्यक्ति भी मेरी तरह से ही है और उसके बारे में अनाप-शनाप बातें करना मेरा काम नहीं है। तो सामान्य मनुष्य में यह सूझ-बूझ यह प्रेम-विवेक नहीं होता । जरा सा भड़काने पर वह क्रोधित हो जाता है और सांड की तरह तोड़-फोड़ करने लगता है। वह जैसा चाहे

व्यवहार कर सकता है। व्यवहार के अनुसार वह परिवर्तित होता चला जाता है। कारण यह है कि वह अभी तक सहजयोगी नहीं है।

सहजयोगी हर चीज का आनन्द लेता है। मान लो कोई व्यक्ति बहुत नाराज एवं उग्र स्वभाव हो जाता है, वह भी देखता है कि क्या घटित हो रहा है, वह किस प्रकार बर्ताव कर रहा है। किसी पर नाराज होना धर्म नहीं है, यह धर्म नहीं है। दूसरों पर नाराज होना, हर समय उन पर चिल्लाते रहना, हर समय उनसे कुछ लेते रहना या स्वयं को अति महान् समझकर उनकी आलोचना करते रहना तुच्छता है। इसका कोई लाभ नहीं होता । जीवन के अन्त तक पहुंचते-पहुंचते आपको लगता है कि आपका एक भी मित्र, एक भी पड़ोसी नहीं है। आप यदि अहंकारी हैं तो आप स्वयं को अनन्त समझते हैं और बोलते चले जाते हैं, बके चले जाते हैं। दूसरा व्यक्ति आपकी बातों से ऊब जाता है फिर भी आप बोले चले जाते हैं- मैंने ऐसा किया, मैं वहां गया; मैं-मैं-मैं। किसी भी हद तक आपकी बात जा सकती है परन्तु आपको अपने कथनों पर लज्जा नहीं आती । सहजयोग में आने से पूर्व मैंने लोगों को अन्य लोगों के विषय में मूर्खतापूर्ण दृष्टिकोण रखते हुए देखा है। कोई व्यक्ति यदि किसी अन्य के विषय में कोई गलत बात कहता है तो उसका अपना मस्तिष्क विकृत हो जाता है। मस्तिष्क ही जब सामान्य न होगा तो व्यक्ति रोगी हो जाएगा और सभी प्रकार के रोगों को स्वीकार करेगा । यह अत्यन्त भयानक बातें हैं, दूसरे लोगों के लिए नहीं, अपने लिए । इस तरह के रोगी व्यक्ति को कोई भी सहन नहीं कर सकता । मैंने लोगों को कहते देखा है कि अब मैं धार्मिक व्यक्ति हूँ। तो क्या? हर समय वह यही कहते रहते हैं कि आप ऐसा नहीं कर सकते, वह नहीं कर सकते, यहां नहीं बैठ सकते, यह नहीं खा सकते । एक सामान्य व्यक्ति होने के कारण क्योंकि आप स्वयं को नहीं देखते इसलिए स्वयं को अनुशासित करने के स्थान पर आप अन्य लोगों को अनुशासित करने का प्रयत्न करते हैं। आप केवल अन्य लोगों को देखते हैं।

आत्मसाक्षात्कार होते ही आप स्वयं को देखने लगते हैं कि आपमें क्या दोष है। आत्मा बनने के पश्चात् आत्मा के प्रकाश में आप स्वयं को देखते हैं, केवल स्वयं को । जब आप स्वयं को ठीक करना जान जाते हैं तब आप किस प्रकार व्यवहार करते हैं और किस प्रकार अपना आनन्द लेते हैं! छोटे-छोटे कार्य जो आप करते हैं, सुन्दर सुन्दर बातें जो आप कहते हैं वह बहुत मधुर होती है। नि:सन्देह कुछ लोगों को सुधारा नहीं जा सकता । वे अशोध्य होते हैं। तो आपको देखना चाहिए कि अमुक व्यक्ति अशोध्य है, आप उसके लिए कुछ नहीं कर सकते। सहजयोग में भी कुछ लोग हैं जो गलत ढंग के लोगों की सहायता करने में लगे रहते हैं, मानों उन्हें सहजयोग में खुद मुखत्यारी प्राप्त हो गई हो । कोई यदि गलती करता है तो दो घंटे के अन्दर हमें उस खुद मुख्त्यार के टेलिफोन की आशा होती है। वह कहता है कि कृपा करके श्रीमाताजी से कहें कि अमुक व्यक्ति का ध्यान रखना है। ऐसा करना है, वैसा करना है। मुझे सूचित करना कि "नहीं, आप अवश्य सहायता करें, अवश्य कुछ करें", उनकी आदत है। अब तो यह एक आम बात हो गई है। हम जानते हैं कि अभी वह व्यक्ति आएगा और इस विषय पर एक बहुत बड़ा भाषण देगा । तो मानव का यह स्वभाव है कि वह जीवन को भिन्न प्रकार की जटिलताओं से गुजरता है। जन्म से ही उसमें कुछ ऐसे गुण होते हैं जिनके कारण वह सामान्य व्यक्ति नहीं हो पाता । यद्यपि हम समझते हैं कि वह सामान्य है। उसकी प्रतिक्रियाएं और बातें अत्यन्त हास्यास्पद होती हैं। टेलिफोन करके मुझे किसी व्यक्ति के बारे में कुछ कहने की, उसका ध्यान रखने के विषय में कुछ कहने की आवश्यकता नहीं है। अनावश्यक रूप से किसी के मामलों में दखलंदाजी! जब आपको कोई अधिकार नहीं, आपने उस व्यक्ति से कुछ नहीं लेना देना तो यह व्यर्थ के नमूने बनाने की क्या आवश्यकता है? यह सब डिजाइन लुप्त हो जायेंगे। मेरी समझ में नहीं आता कि यह नमूने उन्हें कहां से मिलते हैं? हो सकता है उनके देश से, परिवार से या वंश से । **आप जो भी कहें, यह सब समाप्त हो जाता है। आपकी वंश परम्परा (Genes) समाप्त हो जाती है। यही सहजयोग है। यहां आप आत्मा बन जाते हैं, सभी कुछ परिवर्तित हो जाता है; आप ऐसे व्यक्ति बन जाते हैं जो जानता है आनन्द क्या है, जो आनन्द का आनन्द लेता है, जो अस्तित्व का आनन्द लेता है, जो अन्य लोगों को आनन्द प्रदान करता है और उन्हें पसन्द करता है।** हर समय विचार करें कि किस प्रकार दूसरों को खुश किया जाए । ऐसा होता है यद्यपि आपका पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा आदि उसी प्रकार हुए हैं जैसे अन्य लोगों की । परन्तु आपके वे सब संस्कार लुप्त हो जाते हैं और आप विवेकशील, सुन्दर एवम् आनन्दमय व्यक्ति बन जाते हैं।

आपने यह उपलब्धि प्राप्त की है, संभवत: आप इसके विषय में न जानते हों। जिस प्रकार इस स्काऊट मैदान में आप आनन्द ले रहे हैं कोई अन्य समूह ऐसा आनन्द न ले सकता । मैं देख सकती हूँ कि आप लोग यहां क्या कर रहे हैं, किस प्रकार एक-दूसरे की संगति का आनन्द ले रहे हैं। यह अत्यन्त प्रशंसनीय है क्योंकि आपका हृदय आत्मानन्द से परिपूर्ण है, यही आत्मा आपके अन्दर प्रकाशमान है। अपने अन्दर देखकर आप निर्णय कर सकते हैं कि जो मैं कह रही हूँ वह ठीक है या नहीं। निसन्देह: कुछ लोग ऐसे भी हैं जो

स्वयं को बहुत उच्च मानते हैं, वे किसी होटल या आवासगृह में ठहरे हुए हैं। उन्हें यह आनन्द प्राप्त नहीं हो रहा । अब भी वह सोचते हैं कि वे कुछ महान चीज हैं। अतः उन्हें कहीं बाहर ठहरना चाहिए । कितनी हैरानी की बात है। मैंने देखा है, विशेषतः भारतीय लोग जब कनैला आते हैं तो होटल में ठहरना चाहते हैं। अपने जीवन में यद्यपि उनके घर में एक ही स्नानागार हो, परन्तु कनैला आकर वे होटल में रुकना चाहते हैं जहां, सभी सुविधाओं से पूर्ण जुड़ा हुआ स्नानागार हो । युवा लोग, अत्यन्त हैरानी की बात है। हो सकता है कि उन्होंने कभी अच्छा होटल न देखा हो या वे बहुत खराब स्थितियों में रहते हों।

जो व्यक्ति सहजयोगी है वह कहीं भी रह सकता है, कहीं भी सो सकता है। उसे प्रसन्न करने के लिए उसको आत्मा है किसी और चीज की आवश्यकता नहीं । केवल आत्मा ही आपको प्रसन्नता प्रदान करती है बाकी सब चीजें समस्याओं की सृष्टि करती हैं। भिन्न धर्मानुयायी होने के कारण आप एक-दूसरे को बुरा मानते हैं। ईसाइयों के बारे में यदि आप जानना चाहते हैं तो यहूदियों के पास चले जाए और यहूदियों के बारे में जानना चाहते हैं तो मुसलमानों के पास चले जाएं और मुसलमानों के बारे में जानना चाहते हैं तो हिन्दुओं के पास चले जाएं । आप हैरान होंगे की लोग किस प्रकार दूसरों को बुरा बताते हैं और स्वयं को सर्वोत्तम मानते हैं। तो यह जो दृष्टिकोण है, यह पूर्णतः परिवर्तित हो जाता है। आप भूल जाते हैं कि कौन क्या है? किसका क्या धर्म है और किस धरातल से वो आया है। सभी एक हो जाते हैं और सहजयोगियों की संगति का आनन्द लेते हैं। यहां पर केवल सहजयोगी हैं बस। जहां इतने सहजयोगी होंगे वहीं मक्का है, वहीं कुम्भ मेला है। इसे आप कुछ भी नाम दे सकते हैं । यह सामूहिक आनन्द आपको इसलिए प्राप्त हुआ है क्योंकि सत्य को देखने में रुकावट डालने वाले बन्धन आप पार कर चुके हैं।

जैसा मैंने कल कहा था, सत्य यह है कि आप आत्मा हैं। एक बार जब आत्मा बन जाते हैं तो आप गुणातीत, कालातीत और धर्मातीत हो जाते हैं। इन सीमाओं को पार करते ही आप समुद्र में एक बूंद सम हो जाते हैं। बूंद यदि समुद्र से बाहर है तो सदैव यह सूर्य से डरती रहती है कि कहीं धूप इसे सुखा न दे । यह नहीं जानती कि क्या किया जाए और किधर जाया जाए । परन्तु एक बार इसकी एकाकारिता जब समुद्र से हो जाती है तो यह चलती है और आनन्द लेती है क्योंकि अब यह अकेली नहीं है, यह अकेली नहीं है। आनन्द के सुन्दर सागर की लहरों के साथ यह चल रही है। आपने भी यही स्थिति प्राप्त की है। इसका ज्ञान आपको है। आप जानते हैं । परन्तु क्योंकि आप आत्मा हैं आप नहीं जानते कि आपने यह उपलब्धि पा ली है। अब आपको चाहिए कि सावधानी से स्वयं को देखें । आप हैरान होंगे कि आप कितने परिवर्तित हो गए हैं, कितने सहज, विवेकशील एवम् बुद्धिमान हो गए हैं, पश्चिम में बहुत सी समस्याएं इसलिए आती हैं क्योंकि वे लोग मूर्ख हैं। मैं सोचती हूँ, वे अत्यन्त मूर्ख लोग हैं, 80 वर्ष का वृद्ध पुरुष 20 वर्ष की लड़की से विवाह करना चाहता है। उसकी समझ में नहीं आता कि वह ऐसा क्यों कर रहा है। वह अपनी आयु को स्वीकार नहीं कर पाता, वह स्वीकार नहीं कर पाता कि मैं वृद्ध हूँ और वृद्ध पुरुष की तरह से मुझे आचरण करना चाहिए। वह ऐसी युवती से विवाह करना चाहता है जो उसकी पोती की आयु की है। पश्चिम में यह आम बात है। वे कब्र में जाने वाले होंगे परन्तु कोई बात नहीं, इस प्रकार की पत्नी वे चाहते हैं। यह समस्या पश्चिम में है। इसका कारण क्या है? क्योंकि वे नहीं समझते कि वे वृद्ध हैं और वृद्ध होना गर्व की बात है। जब मैं पांच साल की थी, मैं कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि तब इतने लोग मेरे जन्मदिवस पर मुझे बधाई देने के लिए आए होंगे । जब मैं 50 साल की थी तब भी इतने लोग न थे, आज जब मैं 75 वर्ष की हूँ, आप देखिए, कितने लोग जन्मदिवस के इस अवसर पर शुभकामनाएं देने के लिए यहां आए हैं! यदि आप विवेकपूर्ण रहे हैं तो आपको अपनी आयु का गर्व होना चाहिए। परन्तु यदि आप मूर्ख हैं तो कोई आपकी मदद नहीं कर सकता । ऐसे व्यक्ति पर सभी लोग हंसेंगे। पश्चिम में यह प्रथा है कि एक पत्नी को तलाक देकर दूसरी पत्नी लेते चले जाएं । भारत में बिल्कुल विपरीत है। यहां महिलाओं का अधिक सम्मान नहीं है। उनसे आशा की जाती थी कि महिलाओं का सम्मान करें, उन्हें सती के पद पर बिठाएं। परन्तु महिलाएं चाहे जितना भी बलिदान करें पुरुष उनका सम्मान नहीं करते । अब यह दोष कहां से आया । कहती हैं कि किसी कवि ने लिखा है कि महिलाओं को पीटना चाहिए। यह कौन-सा कवि है? मैं सोचती हूं कि इसकी पिटाई होनी चाहिए । महिला की कोख से उत्पन्न होकर उसने यह लिखा! तो हम गलत चीजें अपनाते चले जाते हैं। यह इसलिए होता है कि आपमें विवेक का अभाव है। बुद्धिमान व्यक्ति केवल विवेक शीलता को ही अपनाएगा । किसी मूर्खतापूर्ण चीज को वह स्वीकार न करेगा। एक के बाद एक पुस्तकें आप पढ़ते चले जाते हैं। यह आपको कहां पहुंचाती है। आपको लगता है कि यह पुस्तकें आपका कोई हित नहीं कर रहीं। फिर भी यदि आपको पढ़ने का शौक है तो आप पढ़ते ही चले जाते हैं। तो विवेकहीनता के कारण आप भले-बुरे में भेद नहीं कर पाते । आप अपने कार्यों को उचित ठहराने लगते हैं और कहते हैं कि जो मैं कर रहा हूँ, सर्वोत्तम है। यह अहम् नहीं है, मैं कहूंगी यह मानवीय मूर्ख

समझ है। जो मैं कर रहा हूँ वह ठीक है। मेरा दृष्टिकोण ठीक है। किसी को यह बताने की हिम्मत कैसे हुई कि यह गलत है? ऐसे व्यक्ति पर सभी लोग हंसेंगे, उसका मजाक उड़ाएंगे और वह बहुत कष्ट उठाएगा। परन्तु कभी स्वीकार नहीं करेगा कि उसने कोई गलत कार्य किया है।

जब आप धर्मातीत हो जाते हैं, धर्म से ऊपर उठ जाते हैं तब धर्म आपका एक अंग बन जाता है। तब आप गलत कार्य नहीं करते । आप गलत कार्य नहीं करते । ऐसा नहीं है कि कोई आपसे कहता है या आप किसी का अनुसरण करते हैं। क्या ऐसा करने के लिए कोई विवशता या अनुशासन होता है? परन्तु आप गलत कार्य करना ही नहीं चाहते । कोई भी असम्माननीय, अप्रिय बात आप नहीं कहना चाहते । आत्मरूप सहजयोगी का यही गुण है। आत्मा बनने के पश्चात् आपको कुछ बताना नहीं पड़ता । ये इतना स्पष्ट, इतना प्रत्यक्ष होता है कि जितनी गहराई में व्यक्ति अपने अन्दर जाता है उसे लगता है कि उसके अन्दर अत्यन्त महानता और सुन्दर भावनाएं निहित हैं। अपने सगुणों से आप दूसरों के अहम् पर विजय पा लेते हैं।

मैं आपको एक कहानी सुनाती हूँ। एक बार मैं एक सन्त से मिलने गई । सहजयोगी कहने लगे कि श्रीमाताजी आप तो कभी इन गुरुओं से मिलने नहीं जातीं ! मैंने कहा तुम क्यों चिन्ता करते हो? मेरे साथ आओ । हमें पहाड़ी पर चढ़ना था । मैंने कहा यहां से उसकी चैतन्य लहरियां देखो । कितनी चैतन्य लहरियां आ रही हैं! हम पहाड़ी पर पहुँचे । यह सन्त वर्षा पर प्रभुत्व के कारण प्रसिद्ध थे । जोर से बारिश आने लगी और मैं पूरी तरह भीग गई । जब मैं ऊपर पहुँची तो उसे एक पत्थर पर बैठा हुआ पाया । क्रोध से वह कांप रहा था। उसकी गुफा में जाकर मैं बैठ गई । अन्दर आकर उसने कहा,"मां, आपने मुझे बारिश क्यों नहीं बन्द करने दी? क्या आपने मेरा घमण्ड तोड़ने के लिए ऐसा किया?" मैंने कहा, "नहीं नहीं, मुझे तो तुम्हारे अन्दर कहीं अहम् नहीं दिखाई दिया ।" परन्तु समस्या तो कुछ और है; तुम सन्यासी हो, त्यागी हो । तुम मेरे लिए एक साड़ी लाए थे, क्योंकि तुम एक सन्यासी हो मैं तुमसे साड़ी नहीं ले सकती । अत: मुझे भीगना पड़ा ताकि मैं तुमसे साड़ी ले सकूं और वह द्रवीभूत हो गया। वह बिल्कुल भिन्न व्यक्ति बन गया । विवेक द्वारा आप भिन्न प्रकार के लोगों को संभाल सकते हैं। आप ऐसी बातें कहते हैं जिनसे उनका अहम् पिंघल जाता है। उनके बन्धन भी वश में किए जा सकते हैं और एक नई प्रकार की जागृति उनमें लाई जा सकती है। वे आपके अन्दर विवेक, प्रेम और आत्मा की अभिव्यक्ति को देख पाते हैं। इसी प्रकार लोगों ने सन्तों को बहुत दु:ख देने तथा सताने के बाद भी उनका सम्मान किया, उन्हें प्रेम किया ।

परन्तु उन दिनों के सन्त निश्चित रूप से बहुत अच्छे लोग थे । परन्तु वे अपने शिष्यों के प्रति बहुत कठोर थे और उनसे बहुत ज्यादा अनुशासन की आशा करते थे । इसका कारण यह था कि उनके शिष्य आत्मसाक्षात्कारी न थे । ये गुरु सोचते थे कि अनुशासित किए बिना उनके शिष्य कभी उन्नत न होंगे और महान न बन पाएंगे । अत: उन्हें अनुशासित किया जाता था । ये जिज्ञासु भी इस अनुशासन को स्वीकार करते थे और गुरु की आज्ञानुसार कार्य करते थे । वे व्रत करते, सिर के भार खड़े रहते । परन्तु सहजयोग में इस प्रकार का कोई अनुशासन नहीं सिखाया जाता । इसका कारण यह है कि आत्मा जागृत है और प्रकाश देती है। इस प्रकाश में आप स्वयं को स्पष्ट देखते हैं और अनुशासित करते हैं। मुझे कुछ बताना नहीं पड़ता ।

आप जानते हैं कि बहुत से लोगों ने रातों-रात नशे त्याग दिए । मैंने उनसे कुछ नहीं कहा । नशे आदि के बार में मैंने उनसे कभी बात नहीं की । उन्होंने ऐसा किस प्रकार किया? क्योंकि उनमें प्रकाश था । आज आपको भी आत्मा का यही प्रकाश प्राप्त हो गया है। आप पूर्णत: स्वतन्त्र हो गए हैं। पूर्णत: स्वतन्त्र क्योंकि आपमें प्रकाश है। आप गलत कार्य नहीं कर सकते । मान लो यहां रोशनी है और यहीं यदि कोई धमाका होता है तो मैं धमाके की ओर नहीं दौड़ूंगी और न ही आप उधर दौड़ेंगे । क्योंकि आपके पास आँखे हैं । **तो आत्मा और उसका प्रकाश पथ प्रदर्शक तत्व है जिनके द्वारा आप गुणातीत, कालातीत और धर्मातीत बन जाते हैं। आप किसी चीज के दास नहीं हैं। आप घड़ी के, समय के दास नहीं हैं। अपने गुणों के भी आप दास नहीं हैं। आप यह भी नहीं देखना चाहते कि आप आक्रामक हैं, तामसिक प्रवृत्ति के या सन्तुलित (Right Sided, Left Sided or in the Centre)।** आप सहजयोगी हैं और सहजयोगी इन सब चीजों से ऊपर होता है। आप गुणातीत हैं, धर्मातीत हैं क्योंकि धर्म आपका अंग प्रत्यंग बन गया है। आपको कोई धर्मानुशासन नहीं मानना पड़ता । सहजयोग के कुछ आश्रमों में मैंने देखा है कि लोग अत्यन्त नियमनिष्ठ हैं। उन्हें इतना कठोर नहीं होना चाहिए । मुझे उनसे कहना पड़ा कि इतने नियमनिष्ठ न हों। कोई व्यक्ति यदि प्रात: चार बजे नहीं उठ पाता तो कोई बात नहीं । उसे दस बजे उठने दो । कुछ समय पश्चात् वह स्वयं चार बजे उठेगा । उन्हें बहुत ज्यादा अनुशासित करने का प्रयत्न न करें। बच्चों को भी बहुत ज्यादा अनुशासित करने का प्रयत्न न करें। निसन्देह: यदि वे आत्मसाक्षात्कारी हैं तो वे स्वयं बहुत अच्छे हैं, बहुत सुन्दर हैं। यदि वे आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं तो उन्हें आत्मसाक्षात्कार देने का प्रयत्न करें । एक बार जब आप यह महसूस कर लेंगे कि जो लोग आत्मसाक्षात्कारी नहीं हैं वह अंधेरे में हैं, इसी

कारण वे गलतियां करते हैं, तब आपका दृष्टिकोण उनके प्रति बदल जाएगा । तब आप उनके प्रति अत्यन्त धैर्यवान, करुणामय, स्नेहमय, प्रेममय होने का प्रयत्न करेंगे; क्योंकि आप जान जाएंगे कि वह व्यक्ति आत्मसाक्षात्कारी नहीं है, उसके पास चक्षु नहीं हैं, वह देख नहीं सकता । वह चक्षुविहीन है, सुन नहीं सकता और वास्तविकता को महसूस भी नहीं कर सकता । सबसे पहले उसे सत्य महसूस करवाएं, उसे भाषण देने या अनुशासित करने का क्या लाभ है? ऐसी स्थिति में तो वह गलतियां करता चला जाएगा और स्वयं तथा अन्य लोगों को कष्ट देता रहेगा ।

तो अपने आत्मसाक्षात्कार से आपने यही उपलब्धियां पाई हैं कि आप इन सब चीजों से ऊपर उठ गए हैं और प्रेममय, आनन्दप्रदायक स्वभाव के व्यक्ति बन गए हैं। सहजयोग में मैं इसके बहुत से उदाहरण दे सकती हूँ। मैंने उनके प्रेम और स्नेह का सौन्दर्य देखा है, न केवल अपने प्रति बल्कि अन्य लोगों के लिए भी । यदि यह प्रेम केवल मेरे लिए ही होता तो मैं इसका वर्णन कर सकती । कल ही मैंने बताया कि ये लोग इजराइल गए थे । अब ये मिस्र और रूस गए । उनसे किसने कहा? मैं किसी को कहीं जाने के लिए नहीं कहती । अपने आप ही उन्हें महसूस हुआ कि उन्हें जाना चाहिए और यह कार्य करना चाहिए, और लोगों को अज्ञान से मुक्ति दिलानी चाहिए । आज जब आप लोग मेरा 75वां जन्मदिवस मना रहे हैं, इतने सारे गुब्बारे लगाए गए हैं। वे अत्यन्त सुन्दर एवम् मनोहर हैं। उनके भिन्न रंग मेरे प्रति आपके प्रेम की अभिव्यक्ति कर रहे हैं। यहां जो कुछ भी आपने किया, सारी सजावट में, हर चीज में मुझे आपका प्रेम दिखाई दे रहा है। मुझे लगता है कि मेरे बच्चे इतना प्रेम करने वाले हैं। मैंने आपके लिए कुछ नहीं किया । मेरी समझ में नहीं आता कि कौन-सी चीज आपको इतना कृतज्ञ बना रही है! अभी तक भी मैं यह जानना चाह रही हूँ कि मैंने किया क्या है! मैंने कुछ नहीं किया । परन्तु जिस प्रकार से आप अपने प्रेम की अभिव्यक्ति करना चाह रहे हैं यह आश्चर्यजनक है! मैं केवल इतना कहूँगी कि आपको अपनी आत्मा का प्रकाश प्राप्त हो गया है। उस प्रकाश में हो सकता है आप मुझमें कोई विशेष चीज देख रहे हों, परन्तु जिस प्रकार से आप अपनी कृतज्ञता प्रकट कर रहे हैं वह मेरी समझ से परे है!

. उस दिन जैसे एक वक्ता ने कहा था, आप अपनी मां का धन्यवाद न करें, उन्हें अपना समझें! यह सत्य है, मुझे धन्यवाद देने की कोई आवश्यकता नहीं, आप मुझे अपने संग समझें। परन्तु नन्हें बच्चों की तरह जिस प्रकार आप मुझे धन्यवाद देना चाहते हैं, आप शिशु ही बन जाते हैं। इसके लिए आप में इतना उत्साह है कि आप यह भी नहीं समझते कि प्राय: कहीं भी इस प्रकार नहीं किया जाता । इस सुन्दर प्रेम की अभिव्यक्ति करने के लिए शिशु सम बनने का प्रयत्न कोई अन्य नहीं करता । यह एक अत्यन्त नई चीज देखी जा सकती है। चहुँ ओर इतनी शान्ति, इतना प्रेम, इतना आनन्द! इतने दूर स्थित इस स्थान पर आप यह किस प्रकार कर सकते हैं, किस प्रकार यह सब कर सकते हैं ! यह समझ पाना सुगम नहीं है। यह मानव की समझ से परे है। उनकी समझ में नहीं आ सकता कि किस प्रकार ये लोग ऐसे-हैं और कैसे इतनी प्रसन्नता पूर्वक ये रह रहे हैं!! आपके घरों में इतनी सुख-सुविधा है, वहां आप आराम से रहते हैं, सभी कुछ है। परन्तु यह स्काऊट मैदान रहने के लिए इतना सुविधा-जनक स्थान नहीं । पर, मैं जानती हूँ, आप कहीं भी रह सकते हैं। आप जहां भी हों, यदि वहां सहज योगी हैं तो आप किसी चीज की चिन्ता नहीं करते । बिना किसी आशा के, बिना किसी आलोचना के, बिना किसी बकवास या मूर्खतापूर्ण बात के, यह सामूहिक आनन्द अति सुन्दर है, यद्यपि आप एक दूसरे की टांग भी खींचते हैं और मजाक भी करते हैं। आप चाहे भारत, इंग्लैंड, अमेरिका या किसी अन्य स्थान से हों, आपकी मित्रता अत्यन्त सुन्दर है।

आपकी सूझबूझ और गतिविधियों में इतना तदातम्य प्राप्त हो जाता है मानों समुद्र में एक के बाद एक लहर उठती हो । यह प्रक्रिया निरन्तर है, शाश्वत है और हमें अन्य लोगों के लिए भी यही स्थिति प्राप्त करनी है। अत: आपको याद रखना है कि आप प्रकाशमान हैं, अन्य लोग नहीं । आपको उनकी समस्याओं के विषय में अत्यन्त सचेत, सहनशील एवं सुघड़ होना चाहिए । उनकी समस्याओं को ध्यान से सुनें । सर्वप्रथम वे आपको बताएंगे कि मेरा व्यापार डूब रहा है, या मेरी पत्नी बेकार है या मेरे बेटे के पास नौकरी नहीं है, वह धनार्जन नहीं करता । सभी प्रकार की चीजें वे आपसे कहेंगे। उन्हें सुनें, उनके लिए यह सब महत्वपूर्ण हैं। इसके बाद आप पायेंगे कि शनै:शनै: वे शान्त हो रहे हैं क्योंकि अपनी आध्यात्मिक जागृति के माध्यम से आप प्रेम, आनन्द एवं आत्मविश्वास प्रसारित कर रहे हैं। आपमें वो शक्तियां हैं कि जहां भी आप खड़े हो जाएंगे वहीं सुख-शान्ति का सृजन कर देंगे । अत: आत्मविश्वस्त हों। आत्मविश्वास न खोएं । दूसरों को समझने लिए आपका विवेक अन्य लोगों को विश्वस्त करेगा कि ये कुछ विशेष लोग हैं। ये क्रोध नहीं करते, ये पागल नहीं है। ये सनक के पीछे नहीं दौड़ते । अत्यन्त सन्तुलित लोग हैं। इसका आप को अभ्यास नहीं करना पड़ता। ये गुण आपमें अन्तर्निहित हैं। इसका आपको गर्व होना चाहिए। आपको यह नहीं सोचना चाहिए कि आपको यह प्राप्त करना है या बनना है। यह आपके पास है- आपके अन्तर्निहित है। आपको आत्मा के प्रकाश में केवल इसे देखना भर है। यह

एक सर्वसाधारण चीज है जो कार्य करती है। आपको समझना अन्य लोगों के लिए सुगम नहीं है। परन्तु आपके लिए उनको समझना अति सुगम होना चाहिए क्योंकि सहज में आने से पूर्व आप उन्हीं जैसे थे और अब वे आपकी ओर देख रहे हैं तथा आप ही जैसे बन जाएंगे । यह अत्यन्त सहज है।

आप देख सकते हैं कि मैंने एक महिला से सहजयोग आरम्भ किया था और अब कितनी महिलाएं हैं। मैंने क्या किया, वास्तव में मैं नहीं जानती कि मैंने क्या किया? मुझे वास्तव में इसका कोई विचार नहीं है। परन्तु आप लोग इतनी कृतज्ञता अभिव्यक्त कर रहे हैं, इतनी प्रसन्नता एवम् इतना आनन्द प्राप्त कर रहे हैं! **तो ये सब बातें मैंने आपको बता दी हैं, आपको अपने अस्तित्व का, अपनी आत्मा का ज्ञान होना चाहिए, आपको पता होना चाहिए कि आप आत्मा हैं। आत्मा के रूप में आप इन सब चीजों से ऊपर उठ जाते हैं और एक बार जब ऐसा हो जाता है तो आप हैरान होंगे कि आपका व्यक्तित्व कितना महान् हो गया है!**

आप सबको अनन्त आशीर्वाद।

✦ ❖ ✦

दिव्य संगीत की चार रातें

जन्मदिवस पूजा के पश्चात् अगली चार रातें (22 से 25 मार्च 1998) अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त संगीतज्ञों ने श्रीमाता जी के श्री चरणों में संगीत के कार्यक्रम किए और उनका आशीर्वाद प्राप्त किया । निम्नलिखित कलाकारों को परमेश्वरी मां और उनके बच्चों की महान् सभा में संगीत प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ :

श्रीमति वनजा लाल कोंडीपारथी

सुप्रसिद्ध गुरु श्री उमा रामाराव की शिष्या श्रीमति वनजा भारतीय शास्त्रीय नृत्य की कुचिपुडि एवम् भारतनाट्यम शैली पर अपने नैपुण्य के कारण प्रसिद्ध हैं।

प. वैभव पंधरीनाथ नागेशकर

सुप्रसिद्ध तबलावादक प. वैभव नागेशकर ने चमत्कारिक तबलावादक, संगीतकार एवम् गुरु के रूप में प्रसिद्धि प्राप्त की है। उनका सम्बन्ध महान संगीतकार उस्ताद अमीर हुसैन खान के फर्रुखाबाद घराना से है।

प. भजन सपौरी

प. सपौरी सुप्रसिद्ध संतूर वादक हैं। वे कश्मीर के परम्परावादी संगीत सूफियाना कलाम गायकी पर बल देते हैं। संतूर पर पखावज के साथ ध्रुपद अंग का वादन उनके आविष्कारों का एक अंग हैं। संगीत के क्षेत्र में अपने योगदान के लिए उन्हें सम्माननीय संगीत नाटक अकादमी एवम् शिरोमणी पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

डा. एन. राजम

हिन्दुस्तानी शास्त्रीय संगीत में गायकी अंग की तकनीक को पूर्ण करने में वायलिन वादक पदमश्री डा. एन राजम अग्रणी हैं। ऐतिहासिक दिवंगत ओंकार नाथ ठाकुर की शिष्या डा. राजम 15 साल के गहन शोध के पश्चात् वायलिन संगीत को मानवीय आवाज के समीप ले आई । वास्तव में डा. राजम और गायकी अंग को संगीत संसार में पर्याय (समार्थ शब्द) के रूप में जाना जाता है।

श्रीमति जरीना शर्मा जी दारूवाला

सरोद संगीत से मन्त्रमुग्ध कर देने वाली सुप्रसिद्ध कलाकार श्रीमति जरीना शर्मा ने इंग्लैण्ड की महारानी सहित विश्व भर के महान् लोगों के सम्मुख सरोद संगीत प्रस्तुत किया है। संगीत नाटक अकादमी एवम् महाराष्ट्र गौरव पुरस्कार से सम्मानित श्रीमति जरीना का सरोद पर 'टप्पा' बजाने में असाधारण आधिपत्य है।

प. विश्वमोहन भट्ट

मोहन वीणा के रचियता, ग्रामी पुरस्कार विजेता प. विश्वमोहन भट्ट ने अपने पावन, मृदु फिर भी जोशीले संगीत द्वारा सहजयोगियों को मन्त्रमुग्ध कर दिया । पश्चिमी हवाईयन गिटार में चौदह और तारें जोड़ भारतीयकरण द्वारा उसे क्रांतिकारी रूप देकर भारतीय संगीत के तन्त्रकारी अंग और गायकी अंग बजाने की अप्रतिभ योग्यता संगीत सम्राट पं. रविशंकर के शिष्य पं. विश्वमोहन भट्ट में है। विश्वभर में

पं. विश्वमोहन भट्ट के संगीत की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई। चीन के इरहु (हरिसण) वादक जे पींग चेंग और अरब के औध (OUDH) वादक सिमोन शहीन के तथा बहुत से अन्य कलाकारों के साथ उनकी जुगलबन्दियों ने उन्हें बहुत विख्याति दिलवाई है।

भारत तथा विदेशों में प. विश्वमोहन भट्ट ने बहुत से पुरस्कार जीते हैं जैसे सुरमणि तान्त्रि, श्रीनगर स्वर शिरोमणि तथा अमेरिका और कनाडा की अवैतनिक नागरिकता ।

रोनू मजूमदार

रोनू मजूमदार भारत के सुप्रसिद्ध कलाकार हैं जिन्हें उनके पिता भानू मजूमदार ने बांसुरीवादन में दीक्षित किया । तत्पश्चात् वे पदम्श्री पं. विजयराघव राव के शिष्य बने और गायकी शैली में दक्षता प्राप्त की । रोनू मजूमदार ने विश्वभर में भिन्न मंचो पर संगीत कार्यक्रमों में भाग लिया जिनमें भारत उत्सव समारोह भी सम्मिलित है। वे राग में अदम्य लयकारी और सुरीली तान मिलाकर प्रशंसनीय परिपक्वता एवम् गहनता की अभिव्यक्ति करते हैं। उनकी प्रस्तुतियां शास्त्रीय सौन्दर्य एवम् भावनात्मकता से परिपूर्ण हैं। उन्होंने श्रोताओं के हृदय को छू लिया।

इन सुप्रसिद्ध कलाकारों की प्रस्तुतियों तथा दानिश्कखान की सरोद, वीना पटरपेकर का कंठ-संगीत, प. जगन्नाथ मिश्र की शहनाई, कीर्ति शिलेदार का कंठ-संगीत, सतीश व्यास का संतूर, शाश्वती सेन का कत्थक नृत्य ने इन दिनों परम चैतन्य की गंगा को बहाए रखा, जिसने सहजयोगियों को अपनी परमेश्वरी मां के चरण कमलों के ध्यान में स्थापित किया ।

स्मरणीय समापन

26-03-1998

लो ! पल झपकते ही इस स्वर्गीय आनन्दोत्सव का समापन दिवस आ पहुंचा । बहुत से सहजियों की आंखों से प्रेमाश्रु बह निकले । इस दिव्य परिसर से विदा लेने के विचारमात्र ने हमारे हृदय झंझोड़ दिए । परन्तु विश्वभर के सत्य साधकों के हृदय में प्रकाश ज्योति जलाना सहजयोगियों का परम कर्त्तव्य है। अत: निर्विचार समाधि के दिव्य किले में शरण लेते हुए हम सबने स्वयं को सन्तुलित किया ।

श्रीमान सी.पी. श्रीवास्तव ने समारोह समापन के इस अवसर पर कहा :

प्रिय सहजयोगी एवम् सहजयोगिनियों, इतने दिनों से हम लोग पूर्ण मानवजाति के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण घटना का उत्सव मना रहे थे - 75 वर्ष पूर्व आपकी परम् पूज्य श्रीमाताजी का अवतरण ।

वास्तव में हम एक ऐसा उत्सव मना रहे हैं जिसे समझा जाना और जिसका मूल्यांकन करना आवश्यक है। उनसे पूर्व भी बहुत से अवतरण हुए, जिन्होंने मानव को सुन्दर धर्म प्रदान किए । इन धर्मों का लक्ष्य मानव जाति को सभ्यता एवम् सदाचार पूर्वक जीना सिखाना था । ये भिन्न धर्म, भिन्न जातियों में विकसित होते गए और इन्हें बहुत से अनुयायी मिलते गए । जैसे जैसे समय बीतता गया, इन धर्मों के कारण सूत्रबद्ध होने के स्थान पर लोग पृथक-पृथक होने लगे । 19वीं और 20वीं शताब्दियों में एक बार फिर से एकीकरण होने लगा । इस समय एक नए अवतरण की अत्यन्त आवश्यकता थी जो मानव जाति को आध्यात्मिकता के उच्च स्तर तक उठा सकता । इसी कारण श्रीमाता जी जन्म लेकर पृथ्वी पर अवतरित हुई । चाहे देखने में यह कार्य असम्भव प्रतीत होता हो, और आरम्भ में तुच्छ बुद्धि लोग इसे न देख पाए कि किस प्रकार श्रीमाता जी अपना लक्ष्य पाने में सफल होंगी, परन्तु आज आप जो कुछ यहां देख रहे हैं, उसे यदि देखें, और आज जो आपने सुना है उसे यदि सुनें तो आप कह उठेंगे - क्या एक नए विश्व की सृष्टि नहीं हो चुकी है? यह उन्हीं का बनाया हुआ विश्व है। आज हम हिन्दु, ईसाई, मुसलमान, सिख सभी के भाई-बहन होने की बातें कर रहे हैं। जन्म से हिन्दू, मैं मस्जिद, चर्च या गुरुद्वारे में पूजा क्यों नहीं कर सकता ? पूजा का कोई भी स्थान सभी के लिए है और यही सहजयोग है। सहजयोग मानवजाति को आध्यात्मिकता के एक अत्यन्त ऊंचे स्तर तक उन्नत करता है। यही उनका उद्देश्य है और इस कार्य को उन्होंने बहुत कठिनाईपूर्वक 28 वर्ष पूर्व आरम्भ किया था । मैं सोचता हूँ कि हमें स्मरण करना है तथा मान्यता देनी है कि अकेले वे मानवजाति में ये महान क्रान्ति ले आईं! उस दिन मैंने आपको 25 वर्ष पूर्व की

एक घटना सुनाई थी, जब वे सड़क पर मृतप्राय पड़े एक युवा को उठाकर घर ले आई थीं। क्या तब उन्होंने उससे पूछा था कि तुम्हारी भाषा कौन सी है? नहीं । क्या उन्होंने उसे पूछा कि तुम्हारा धर्म कौन-सा है - नहीं । क्या उन्होंने उससे पूछा था कि तुम्हारी जाति क्या है - नहीं। वह एक मानव था और वे उस मनुष्य को उठाकर घर लाईं तथा सहजयोग एवम् शक्तिशाली प्रेम से - निस्वार्थ प्रेम से - मां के प्रेम से, उसका उपचार किया और शीघ्र ही यह लड़का, जोकि शराबी था और नशेड़ी था, ठीक होकर परिवर्तित हो गया । तो इस प्रकार इन्होंने यह कार्य आरम्भ किया - स्वयं, व्यक्तिगत रूप से किसी एक व्यक्ति या व्यक्ति समूह की देखभाल करते हुए ।

आप श्री ग्रेगोर को जानते हैं, वह यहां संयुक्त राष्ट्र संघ के राजनयिक के रूप में आया । सत्य की खोज में यह आकर्षक युवा पुरुष हमारे ऑक्सटैड गृह में भी आया । वह हमारे साथ दो दिन रहा और आत्मसाक्षात्कार प्राप्त करके लौटा । आज वह सहजयोग के स्तम्भों में एक है। इस लिए उन्होंने - आपकी परमेश्वरी मां ने - एक एक कदम करके, एक एक मानव से सहजयोग खड़ा किया । आज हम हजारों सहजयोगी यहां बैठे देख रहे हैं और लाखों सहजी विश्व भर में हैं। यह उनकी उपलब्धि है। आपको यहां से क्या संदेश ले जाना है? मैं सोचता हूँ कि हम एक अत्यन्त स्मरणीय घटना - एक उन्नति प्रदायक घटना का उत्सव मना रहे हैं, परन्तु यहां से आप क्या सन्देश लेकर जाएंगे? यह अत्यन्त महत्वपूर्ण है। इस विशाल विश्व के लिए आप संदेश लेकर जाएंगे कि सहजयोग अब पूरे विश्व पर छा जाएगा । पूरे विश्व में इसे फैलना है। जन-जन तक इसे पहुँचना है। हर मानव को उन्नत होना है। आप यह सन्देश ले कर जाएं और, मुझे तनिक भी सन्देह नहीं, श्रीमाता जी के आशीर्वाद से आप सफल होंगे । उनका 80वां जन्मोत्सव मनाने के लिए जब हम एकत्र होंगे तो सम्भवत: हमारी संख्या दस लाख न होगी, तब हम बीस करोड़ होंगे, और क्यों न हों? और जब हम उनका 100वां जन्मदिवस समारोह मनायेंगे तब विश्व में हम पांच अरब सहजयोगी होंगे । मैं उनके प्रति अत्यन्त कृतज्ञ हूँ। 51 वर्षों से वे मेरी पत्नी हैं। अगाध स्नेह एवम् प्रेम से उन्होंने मेरी देखभाल की । एक बार वे आस्ट्रेलिया में थीं, वहां से उन्होंने रसोइये को हिदायत दी कि किस प्रकार वह कौन सी सब्जी मेरे लिए बनाए । पत्नी हो तो ऐसी । वे मेरी बेटियों की मां हैं और आपकी भी । उन्होंने केवल हमारी ही नहीं आप सब की देखभाल भी उतने ही प्रेम से की है। उन्होंने कभी अपने और पराये बच्चों में भेदभाव नहीं किया । हर बच्चा उनका अपना बच्चा है। उनके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता किस प्रकार अभिव्यक्त करूं? मैं तो मात्र इतना ही कह सकता हूँ कि मैं आपको प्रेम करता हूँ। हम उनके शाश्वत जीवन की कामना करते हैं। उनकी जिम्मेदारी शाश्वत है। मैं जानता हूँ कि आपकी भी यही कामना है, और वापिस जाकर आपका प्रेम, उनके सुस्वस्थ एवं खुशियों से परिपूर्ण चिरायु की आपकी कामना मैं उन्हें बताऊंगा ।

दिव्य जीवन से लौकिक जीवन की ओर आते हुए मैं कहना चाहूँगा कि इस समारोह का आयोजन बहुत ही अच्छी तरह से किया गया । समारोह का आरम्भ हमने अभिनन्दन कार्यक्रम से किया । इसमें बहुत से महत्वपूर्ण व्यक्तियों ने भाग लिया तथा श्रोताओं को सम्बोधित किया । पूर्व वित्तमंत्री श्री चिदम्बरम ने जिस प्रकार कहा, वे आश्चर्यचकित (Bewildered) थे, अपनी दृष्टि पर विश्वास न कर पाये कि संसार में परस्पर लड़ने वाले लोग यहां किस प्रकार पारस्परिक प्रेम में बंधे हैं! लौटते हुए वे हैरान थे, स्तब्ध थे; समझ न पा रहे थे कि किस प्रकार यह सब घटित हुआ ! शनै: शनै: वे जान जाएंगे । ये सब लोग इतनी अच्छी तरह से बोले, इन्होंने इतना सराहा कि हमें उनके प्रति कृतज्ञ होना चाहिए । मेरे विचार में, उस दिन, योगी महाजन ने बहुत बड़ी भूमिका निभाई । वे ही समारोह-प्रमुख थे । राजेश शाह आज यहां नहीं हैं; बहुत से सम्माननीय अतिथियों को यहां लाने का श्रेय उन्हें है। वह एक ऐसा क्षण था जब ये राजनीतिक नेता देखने लगे कि उनमें अभाव है तथा आपकी श्री माताजी ऐसे आदर्श की सृष्टि कर रही हैं, जिसका अनुकरण उन्हें करना चाहिए।

तत्पश्चात् रंगा-रंग संगीत कार्यक्रम हुए । संगीत आध्यात्मिक है। यह व्यक्ति को उन्नत करता है। संगीत सहजयोग का अभिन्न अंग रहा है। इसके लिए मैं 'बाबा' को बधाई एवम् धन्यवाद देना चाहूँगा । मैं उन्हें 'बाबा' कहता हूं क्योंकि वे मेरे 'साला' हैं। सभी प्रकार के संगीत को यहां एकत्र करने में उन्होंने आश्चर्यजनक भूमिका निभाई है । आइए ताली बजाकर उनका अभिनन्दन करें।

संगीत समारोह के अतिरिक्त, इस प्रकार के विशाल समारोह के लिए जबरदस्त आयोजन की आवश्यकता होती है। दो-तीन हजार लोगों की अन्तर्राष्ट्रीय सभाओं का आयोजन मैंने देखा है और मैं आपको विश्वास दिलाता हूँ कि, जितनी अच्छी तरह इस समारोह का आयोजन हुआ है, वे इससे आधी अच्छी भी न थी । दिल्ली एवम् बाहर के बहुत से सहजयोगियों ने एकजुट होकर इस कार्य को किया है; उन सबके प्रति मैं अपनी कृतज्ञता प्रकट करता हूं । युवाशक्ति अत्यन्त व्यस्त तथा सहायक रही । उन्होंने अहं भूमिका निभाई। भोजन-व्यवस्थापक ने शानदार खाना खिलावाया । सभी एक जुट थे । परन्तु किसी भी सफल आयोजन के पीछे सदैव एक कुशाग्र बुद्धि व्यक्ति, एक प्रमुख होता है। कभी न सोचें कि ऐसे सफल आयोजन स्वत: ही हो जाते हैं। इस

आयोजन के पीछे भी कोई व्यक्ति है - और वह हैं श्री नलगिरकर । मैं उनसे आगे आने की प्रार्थना करूंगा । खड़े होकर इनका अभिनन्दन करें ।

इसी के साथ मैं समापन करता हूँ। सभी कार्यकर्त्ताओं का मैं धन्यवाद करता हूँ।

एक बार फिर श्री निर्मला माता जी की जय ।

धन्यवाद, परमात्मा आपको आशीर्वादित करें।

एक बार पुनः धन्यवाद ।

<u>बाबा मामा</u>

श्रीमान, आपकी सीख एवं समापन के लिए धन्यवाद। यह अत्यन्त सुन्दर थी । मैं सदा आपका 'साला' था और सदैव आपका 'साला' रहूँगा । परन्तु सालेपन से भी अधिक बहुत कुछ है। आप सदैव उसी तरह मेरे पिता सम रहे हैं जिस प्रकार श्री माताजी मेरी मां सम रही हैं। आप दोनों से बहने वाला प्रेम ही मेरे जीवन का स्रोत है - बस मैं इतना ही कह सकूंगा ।

अन्तिम शब्द

डा. वोल्फगैंग हैक

प्रिय भाइयो और बहनों,

बहुत से पश्चिमी सहजयोगियों ने मुझे कुछ शब्द बोलने को कहा । अत्यन्त उलझन की बात है कि 14 दिनों तक जिन लोगों ने आपको राजा की तरह से रखा हो वही आपसे कहें कि 'आने के लिए धन्यवाद'। प्रिय भाइयो और बहनों, अब हम जहां बैठे हैं, जहां यह महल बना हुआ है, कुछ ही दिनों में यहां केवल रेत होगी और गिलहरियां इधर-उधर दौड़ रही होंगी । यहां अंधेरा होगा क्योंकि यहां या तो जनरेटर न होगा या जनरेटर में कोई डीजल न डालेगा । न पानी की टंकियां भरी जाएंगी और न पाइपों में जल होगा। कोई सहायता कक्ष न होगा जहां से पश्चिमी महिलाओं की खरीददारी में सहायता करने के लिए सहजयोगियों को बुलाया जा सके। सदा की तरह कुछ झोंपड़े लिए बंजड़ भूमि होगी। झोंपड़ियां पहले से कुछ सुन्दर होंगी क्योंकि हमें सुन्दर निवास देने के लिए दिल्ली तथा भारत के सहज-योगियों ने इन्हें सुन्दर बनाया है। अतः हमारे जाने के बाद ये सुन्दर दिखाई देंगी । इस सारे आयोजन के लिए हम दिल्ली एवम् भारत के सहजयोगियों तथा श्री नलगिरकर और साथियों के प्रति कृतज्ञ हैं और आपका धन्यवाद करते हैं। कृपया ताली बजा कर एक बार फिर इनका अभिनन्दन करें । यह समारोह हमारी मां के लिए होने के कारण, श्रीमाताजी के प्रिय परिवार की भी अहं भूमिका है। कभी भी हमें इन सुन्दर लोगों के प्रति अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति का अवसर नहीं मिलता । आज मैं कहना चाहूँगा कि इस समारोह में उपस्थित रह कर आपने हमारा सम्मान बढ़ाया । आप अवश्य ही कुछ विशेष हैं जिसके फलस्वरूप आप **हमारी मां** के इतने निकट हैं, हम तो मात्र माध्यम हैं।

श्रीमान सी.पी.साहिब, हम सब के लिए आप विनम्रता एवं गरिमा के उदाहरण हैं। आपका हृदय अत्यन्त प्रेममय है; हमें बहुत प्रसन्नता है कि आप सदा हमारे साथ होते हैं, हमारी परमेश्वरी मां के करीब आप बैठे होते हैं। हमें इसकी बहुत खुशी है और हम आशा करते हैं कि भविष्य में भी आप इसी तरह हमारे साथ रहेंगे ।

प्रिय बाबा मामा, आप वास्तव में हम सबके मामा हैं। सदैव आप सहजयोगियों से घिरे रहते हैं और संगीत अकादमी के लिए शिष्य खोजते रहते हैं। अच्छा होगा कि आपके 999 नामों में हम एक और नाम जोड़ सकें-'जवां रातों के स्वामी'। श्री माताजी के परिवार के अन्य सदस्यों जैसे साधना दीदी, कल्पना दीदी तथा अन्य लोग-जिन्हें न हम भली-भांति जानते हैं और न वो हमसे भली-भांति परिचित हैं-हमें प्रसन्नता है कि वे भी इस समारोह में हमारे साथ रहे । कृपया तालियों द्वारा उनका अभिनन्दन करें।

इस प्रकार इस महान् समारोह का समापन हुआ।

जय श्रीमाताजी।

तनियासं पांसू तव चरण-पङ्केरूह-भवं,
विरिंचिः संचिन्वन विरचयति लोका-न विकलम्!
बहत्येन शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां,
हरः संक्षुदयैनं भजति भसितोद्धूलन-विधिम्

हे देवी, आपके चरण कमल से उत्पन्न होने वाले छोटे से रजकण को चुन कर ब्रह्मा सतत लोक लोकान्तरों की सृष्टि करते हैं, शेषनाग बड़े परिश्रम से अपने सहस्र सिरों पर उठाकर इसे धारण करते हैं और प्रलयकाल में श्री महेश इसी रजकण की भस्म बनाकर अपने अंगों पर लगाते हैं अर्थात् आपके सम्मुख ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश की शक्तियां तुच्छ हैं।

जन्मोत्सव मुख्य प्रवेश द्वार, दिल्ली